जनवरी (प्रथम) 2022 | ₹35.00

चंपक

J

Welcome
2022

VISIT…

LANZAROTE
Caliente.COM

STOMAFIT®

लिक्विड व टैबलेट

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

पेटू जी और गणतंत्र दिवस की परेड

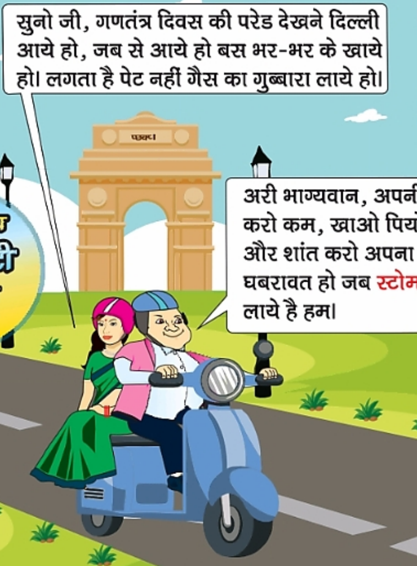
सुनो जी, गणतंत्र दिवस की परेड देखने दिल्ली आये हो, जब से आये हो बस भर-भर के खाये हो। लगता है पेट नहीं गैस का गुब्बारा लाये हो।
अरी भाग्यवान, अपनी चिन्ता को करो कम, खाओ पियो दबा कर और शांत करो अपना मन। काहे घबरावत हो जब स्टोमाफिट साथ लाये है हम।

SUNCARE
बिस्मथ एवं बेलाडोना मिश्रित एंटासिड लिक्विड
स्टोमाफिट
लिक्विड
ANTACID LIQUID WITH BISMUTH & BELLADONNA
STOMAFIT
LIQUID
KEEPS STOMACH FIT

अपच व ऐसीडिटी से तुरंत आराम

450ML, 200ML, 100ML

HAEMOCAL®

Delicious Taste

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

निम्नलिखित कारणों से हुई कमजोरी को दूर करने में सहायक

गर्भधारण, हुकवार्म, पेट में कीड़े, मासिक धर्म, साधारण कमजोरी, बीमारी या संक्रमण, बवासीर से एनीमिया, बच्चों में कमजोरी व थकावट

SUNCARE
HAEMOCAL
Delicious Taste
Iron Tonic with Folic Acid
TANGY ORANGE FLAVOUR

शहद सा गाढ़ा संतरे सा स्वादिष्ट

परिवार के हर उम्र के— सदस्य के लिए लाभकारी...

300ML, 450ML

HAEMOCAL-Z (450ml) जिंक के साथ उपलब्ध

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.

फोन:8447977889/999, 011-46108735, मेल:info@stomafit.com

सभी प्रमुख ऑनलाईन फार्मेसीयों पर उपलब्ध

हेमोकॉल खरीदने के लिए स्कैन करें

स्टोमाफिट खरीदने के लिए स्कैन करें

चंपक

जनवरी (प्रथम) 2022 अंक : 1228

संस्थापक
विश्वनाथ
1917-2002

सुनो कहानी

चीकू का कनाडा क्रेज 4
नए साल का संकल्प 12
जलवायु परिवर्तन पर बहस 17
मौमी की मुलाकात 24
डोरी वाला रूमाल 29
कहां है कोयल 37
पोपो की चाल 47

मुखपृष्ठ

जैसे ही नया साल आता है हम खुश होते हैं और उत्साह, आशा, साहस तथा रोमांच से भर जाते हैं. आप सब को हमारी ओर से नववर्ष की बहुतबहुत शुभकामनाएं.

चंपक
Welcome
2022

मन बहलाओ

सुंदर रंग भरो 8
छिपे चित्र ढूंढ़ें 9
देखो हंस न देना 10
बताओ तो जानें 16
याददाश्त बढ़ाएं 23
बिंदु मिलाओ 28
पता करें 33
चित्र पूरा करें 34
स्मार्ट 36
गलत को बताएं 42
अंतर बताओ 46

चित्र कथाएं

डमरू और नववर्ष का संकल्प 11
चीकू 26
दादाजी और नया साल 40

विशेष पृष्ठ

मजेदार विज्ञान 15
पृथ्वी की रक्षा करें 22
आप के सवाल मेनका आंटी के जवाब 35
नन्ही कलम से 44

संपादक व प्रकाशक ● परेश नाथ

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. फोन : 41398888, 23529557-62.
दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा -121003 से मुद्रित. संपादक - परेश नाथ.
Sold on the condition that jurisdiction for all disputes concerning sale, subscription and published matter will be in courts/forums/tribunals at Delhi.

चंपक में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और किसी से उन की समानता संयोग मात्र है.
प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा भेजना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी. प्रेषित रचनाओं की सुरक्षा/वापसी के लिए कार्यालय का कोई उत्तरदायित्व नहीं है.
दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.
'चीकू' शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है. वार्षिक मूल्य केवल क्रेडिट कार्ड/चैक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'चंपक' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. नहीं. एक प्रति रु. 35.00 (बिना सीडी के),
वार्षिक रु. 966, दो वर्ष रु. 1848. (भारत में)

ग्राहक बनने और वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी संपर्क करें:
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055
फोन: 91-11-41398888, एक्स. नं. 119, 221, 264.
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप: 08588843408
ईमेल: subscription @ delhipress.in

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
बी-3, वडाला उद्योग भवन, नैगांव क्रौस रोड, वडाला मुंबई-400031. फोन : 91-22-24122661, 43473050.

- रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल: article.hindi @ delhipress.in
- निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ईमेल: invites.pressrelease @ delhipress.biz
- संपादक को पत्रों के लिए ईमेल: editor @ delhipress. biz
- ग्राहक विभाग के लिए ईमेल: subscription @ delhipress.in

अपनी कहानी, कविता, ड्राइंग्स तथा क्राफ्ट्स यहां भी भेज सकते हैं :
writetochampak@delhipress.in या एसएमएस करें : 09619587613
www. facebook.com/ChampakMagazine और https://www.youtube.com/ user/ ChampakSciQ

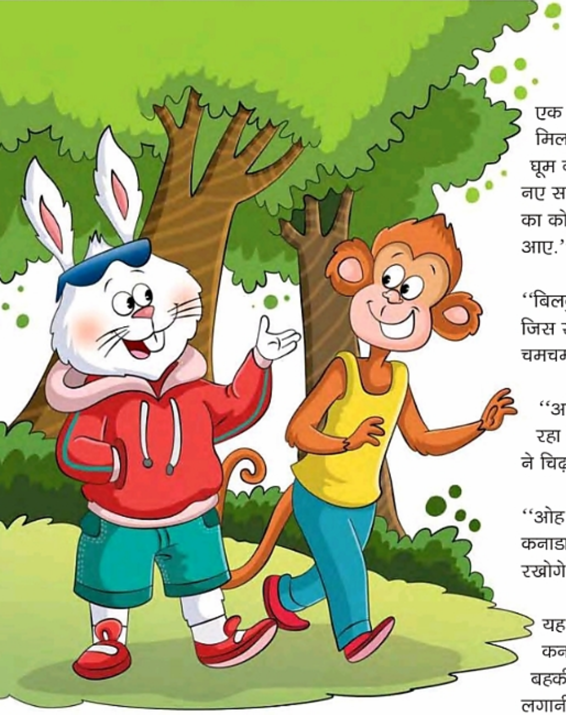

चीकू का कनाडा क्रेज

कहानी ● कुमुद कुमार

चीकू खरगोश हाल ही में कनाडा से लौटा था. अब उसे चंपकवन की कोई भी चीज अच्छी नहीं लग रही थी.

जो भी कोई चीकू से बातें करता, तो वह कनाडा की तारीफ करने लगता. वह कहता, ''कनाडा के शहर बड़े साफ और खूबसूरत हैं. सड़कें साफसुथरी हैं. वहां का खानपान बड़ा पौष्टिक है. सरकारी सुविधाएं बेहतरीन हैं.''

एक दिन चीकू का दोस्त जंपी उस से पार्क में मिला. जंपी ने उस से पूछा, ''चीकू, तुम कनाडा घूम कर आए हो. नया साल नजदीक आ रहा है. नए साल को नए तरीके से मनाने और मौजमस्ती का कोई नया उपाय बताओ, जिस से खूब मजा आए.''

''बिलकुल जंपी, नए साल पर कुछ ऐसा किया जाए, जिस से हमारा चंपकवन भी कनाडा की तरह चमचमाता नजर आए.''

''अरे चीकू, मैं नए साल को मनाने की बात कर रहा हूं. चंपकवन को कनाडा बनाने की नहीं,'' जंपी ने चिढ़ते हुए कहा.

''ओह जंपी, तुम हमेशा छोटा ही क्यों सोचते हो? कनाडावासियों की तरह बड़ा सोचा करो. बड़ी सोच रखोगे तो बड़े और महान बनोगे.''

यह सुन कर जंपी सोचने लगा कि जब से चीकू कनाडा से लौट कर आया है, वह ऐसी ही बहकीबहकी बातें कर रहा है. इस की अकल ठिकाने लगानी पड़ेगी.

तब जंपी ने कुछ सोचते हुए कहा, ''अच्छा चीकू, तुम ही बताओ, क्या बड़ा किया जाए, नए साल पर?''

चीकू ने कहा,'' आओ जंपी, झील की तरफ चलते हैं. मुझे एक बड़ा विचार सूझ रहा है. वहीं चल कर बताता हूं कि नए साल पर क्या नया और बड़ा किया जा सकता है.''

जंपी चीकू के साथसाथ झील की ओर चल पड़ा. वहां पहुंच कर चीकू जंपी को बताने लगा, ''देखो जंपी, अगर हम इस झील पर नए साल पर बांध बनाना शुरू करें, तो यह सभी के लिए फायदेमंद होगा.''

जंपी समझ गया कि चीकू ऐसी बातें कर के उस के नए साल का कार्यक्रम बिगाड़ने वाला है. हम जानवरों को भला बांध से क्या फायदा? ऐसा लगता

है कि कनाडाई लोगों ने चीकू पर कब्जा कर लिया है. वह तो चंपकवन को ही कनाडा बनाने पर आमादा है. इस का कनाडाई क्रेज खत्म करना ही पड़ेगा.

जंपी ने सहमत होते हुए कहा, ''चीकू, तुम्हारे विचार बहुत अच्छे हैं. हम ने तो कभी ऐसा सोचा ही नहीं कि बांध के कितने फायदे हैं? बांध से बिजली बनती है, सिंचाई के लिए पानी मिलता है और मछली पालन भी किया जा सकता है.''

अभी बातें चल ही रही थीं कि चीकू और जंपी को झील के किनारे खड़ा देख कर उन के अन्य दोस्त जीना जिराफ, ब्लैकी भालू और जंबो हाथी भी वहां पहुंच गए. वे जानना चाहते थे कि चीकू और जंपी क्या बातें कर रहे हैं?

जंपी की बात सुन कर चीकू ने कहा, ''अरे जंपी, तुम हमेशा दकियानूसी बातें ही क्यों सोचते हो? ये सब तो बांध के परंपरागत फायदे हैं. कुछ नया सोचो, कुछ बड़ा सोचो, जैसे कनाडा वाले सोचते हैं.''

यह सुन कर जंपी का दिमाग चकराया. उस ने चीकू से कहा, ''चीकू, मेरा दिमाग तो इस से आगे सोच ही नहीं पा रहा है कि बांध के कुछ और फायदे भी हो सकते हैं. कुछ तुम ही बताओ.''

इस बात से खुश हो कर कि जंपी इस से आगे नहीं सोच सकता, उस ने घमंड से कहा, ''देखो जंपी, मैं ने कनाडा में बड़ेबड़े वाटर पार्क और स्विमिंग पूल देखे हैं. वहां बच्चे और बड़े इन वाटर पार्कों और स्विमिंग पूलों में खूब मौजमस्ती करते हैं. कुछ ऐसा नया सोचना चाहिए न, जंपी. हम झील पर छोटा बांध बना कर उस का बहुत उपयोग कर सकते हैं.''

यह सुन कर जंपी अपना सिर खुजलाने लगा और उस के अन्य दोस्त बेखबर वहीं खड़े रहे. वे देर से पहुंचे और पूरी बात समझ नहीं पाए थे. जब उन्हें पूरी बात समझ में आई तो वे भी एकदूसरे का मुंह ताकने लगे.

तभी जंपी के दिमाग में एक विचार आया, उस ने

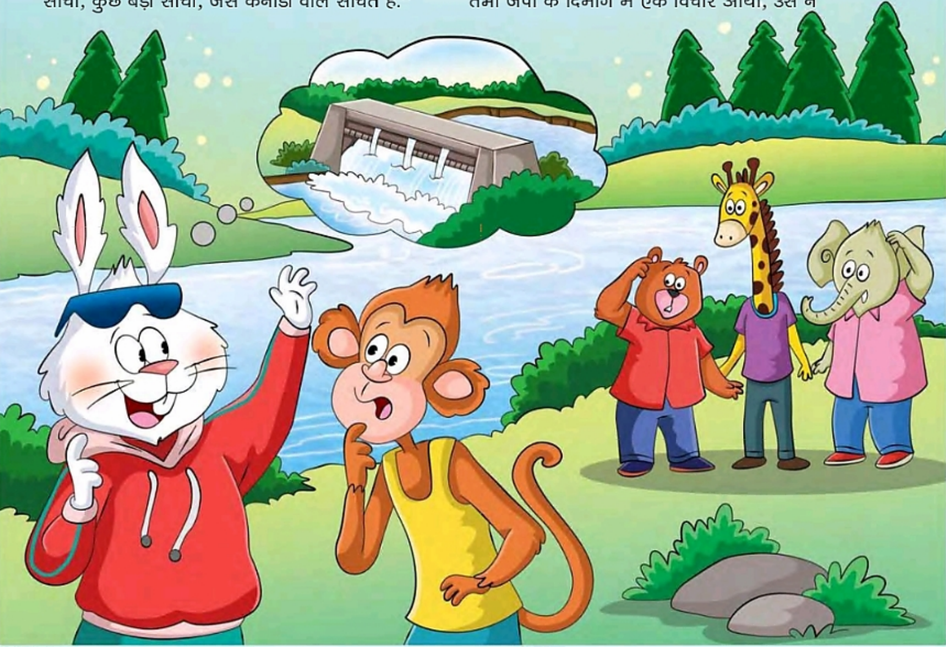

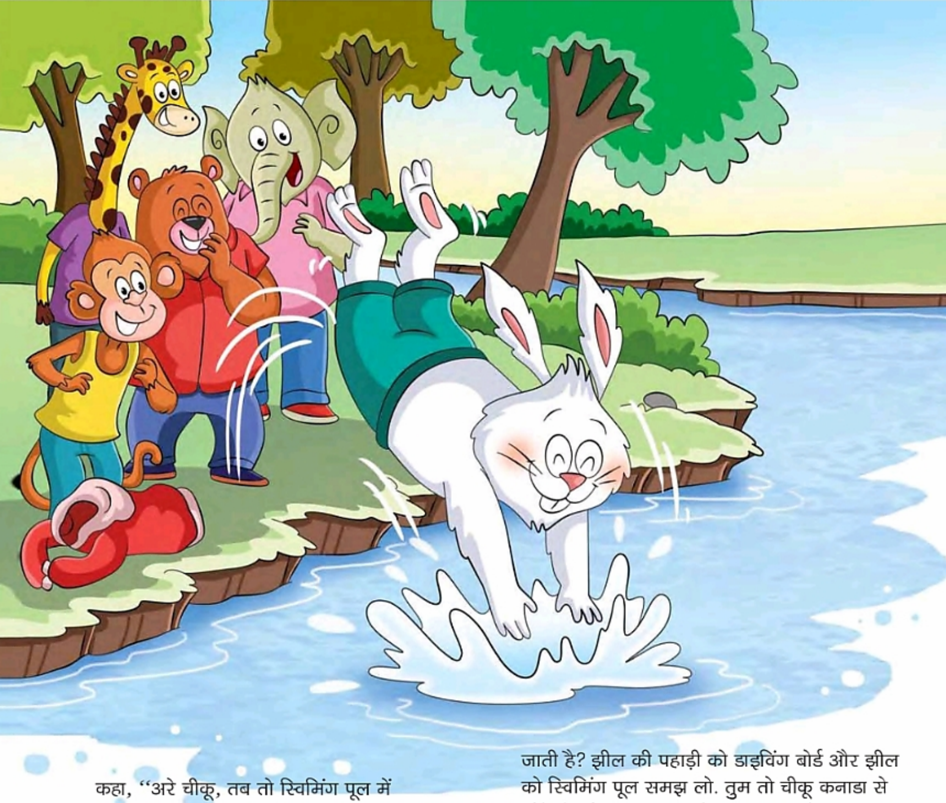

कहा, ''अरे चीकू, तब तो स्विमिंग पूल में कनाडावासी डाइविंग बोर्ड से जोरदार छलांग भी लगाते होंगे, क्यों मीकू?''

मीकू ने बड़ी शान के साथ कहा, ''हां, हां, क्यों नहीं? मैं भी कनाडा में डाइविंग बोर्ड से स्विमिंग पूल में छलांग लगाना सीख कर आया हूं, लेकिन मैं जानता हूं कि जंपी तुम ऐसा नहीं कर सकते, क्योंकि तुम ने कभी डाइविंग बोर्ड से स्विमिंग पूल में छलांग लगाई ही नहीं. यहां स्विमिंग पूल है ही नहीं.''

यह सुन कर जंपी के दोस्त मनमसोस कर रह गए, लेकिन जंपी ने तो कुछ और ही सोच रखा था. उस ने कहा, ''चीकू, नए साल पर हमें यही सिखा दो न कि डाइविंग बोर्ड से स्विमिंग पूल में छलांग कैसे लगाई जाती है? झील की पहाड़ी को डाइविंग बोर्ड और झील को स्विमिंग पूल समझ लो. तुम तो चीकू कनाडा से लौटे हो और बहुत कुछ सीख कर आए हो. हम क्या जानें, ये सब बातें?''

अपनी तारीफ सुन कर चीकू बहुत खुश हुआ. वह जोश में आ गया. उस ने अपनी शर्ट किसी हीरो की तरह लहरा कर एक तरफ फेंक दी. फिर उस ने ऐक्शन दिखाते हुए बिना सोचेसमझे झील में छलांग लगा दी.

लेकिन अपनी तारीफ के नशे में वह भूल गया कि यह झील है, कोई स्विमिंग पूल नहीं. वह झील की लहरों से टकराने लगा. झील का पानी बर्फ की तरह ठंडा था. उसे तैरने में मुश्किल हो रही थी, फिर भी चीकू संघर्ष करता हुआ आगे बढ़ रहा था.

झील के किनारे खड़ा जंपी और उस के दोस्त अब चीकू का मजाक उड़ा रहे थे, ''बड़ा बन रहा था चीकू अपने आप को कि कनाडा में ऐसा होता है, कनाडा में वैसा होता है. अब ले नए साल में स्विमिंग पूल का मजा.''

ऐसा कहते हुए वे सब हंसने लगे. लेकिन तभी चीकू झील के पानी में हिचकोले खाने लगा. यह देख कर वे घबरा गए कि कहीं चीकू पानी में डूब न जाए. लेकिन कुछ ही देर बाद चीकू पानी से बाहर आ गया. ठंडे पानी में तैरने के कारण वह ठंड से थरथर कांप रहा था. अब सब यही सोच रहे थे कि चीकू का कनाडा क्रेज अभी खत्म नहीं हुआ.

जंपी ने उसे अपनी टी शर्ट पकड़ाते हुए कहा, ''अच्छा चीकू, हम तो चले. नए साल की तैयारी शुरू करो, झील पर बांध बनाने की तैयारी शुरू करो. तुम तो कनाडा वालों की तरह बड़ा सोचते हो न. हम तो ठहरे छोटी सोच वाले.''

यह कहते हुए जंपी अपने साथियों के साथ मुसकराते हुए आगे बढ़ने लगा. उसे पूरा यकीन था कि यह झटका खा कर मीकू को सबक मिल गया होगा और उस का कनाडाई क्रेज गायब हो गया होगा.

लेकिन तभी चीकू ने उन को रोकते हुए कहा, ''मेरे प्यारे साथियो, तुम सब को नववर्ष की शुभकामनाएं, लेकिन मैं तुम्हें एक बात तो बताना ही भूल गया.''

''वह क्या?'' सब ने बड़े आश्चर्य से पूछा.

''कनाडा के स्विमिंग पूलों में ठंडा नहीं बल्कि गरम पानी होता है. हमें यहां भी ऐसा ही करने की जरूरत है.''

यह सुनते ही जंपी और उस के दोस्त वहां से भाग खड़े हुए. वे समझ गए थे कि चीकू का कनाडा क्रेज अभी खत्म नहीं हुआ है. वह उन्हें कहीं और कोई नई बात न बताने लगे.

उन्हें भागता देख चीकू वहीं खड़ा मुसकरा रहा था. ●

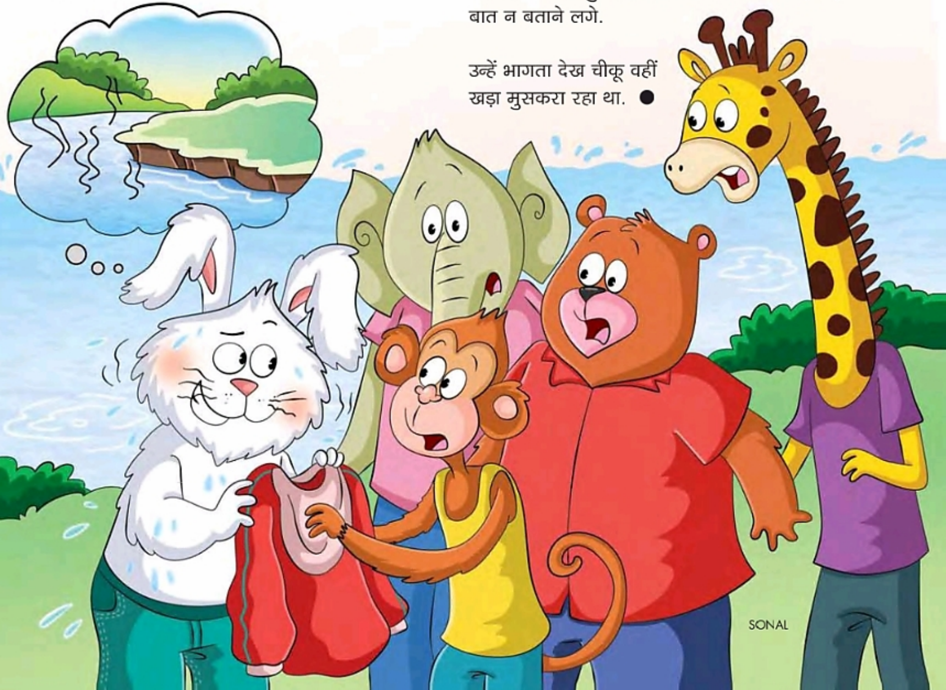

सुंदर रंग भरो

1 जनवरी को
ग्लोबल फैमिली डे
यानी अंतर्राष्ट्रीय
परिवार दिवस मनाया
जाता है.

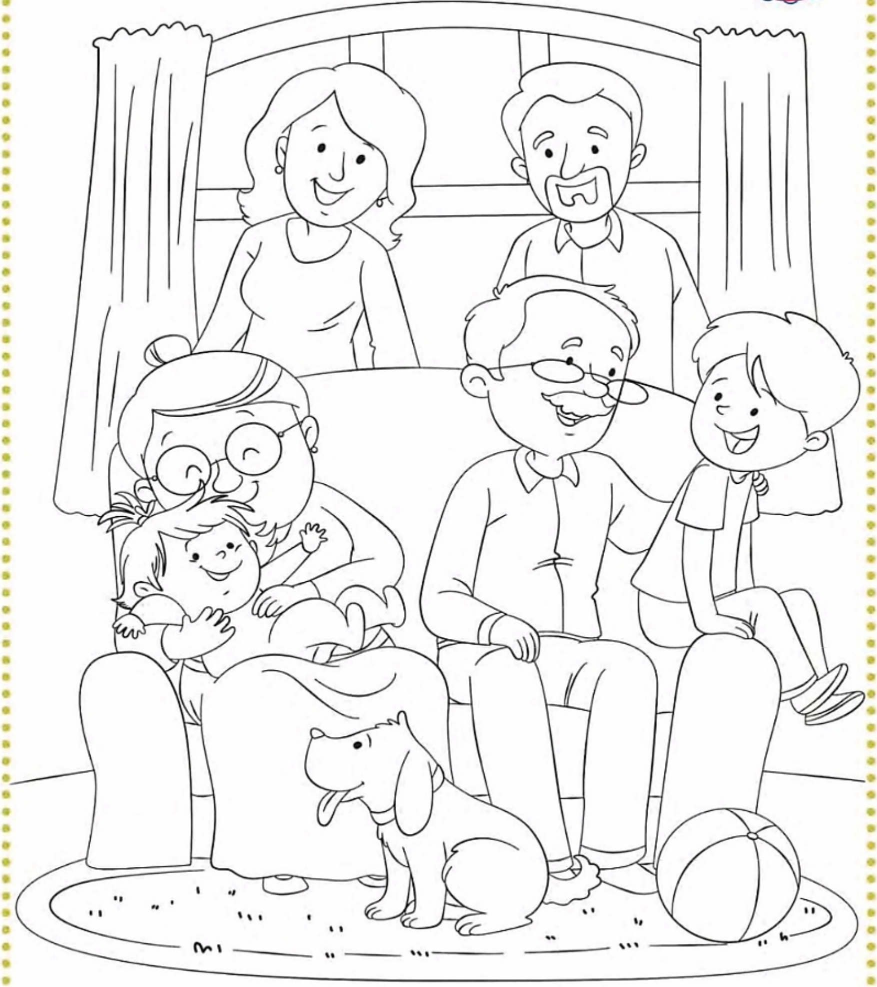

छिपे चित्र ढूंढ़ें

नील और नेहा ने नए साल पर संकल्प लिया कि हर दिन कुछ नया खाया करेंगी. हम ने एम्यूजमेंट पार्क यानी मनोरंजन पार्क में 10 फूड आइटम्स छिपा रखे हैं, जहां वे उत्सव मना रहे हैं. उन्हें ढूंढ़ें.

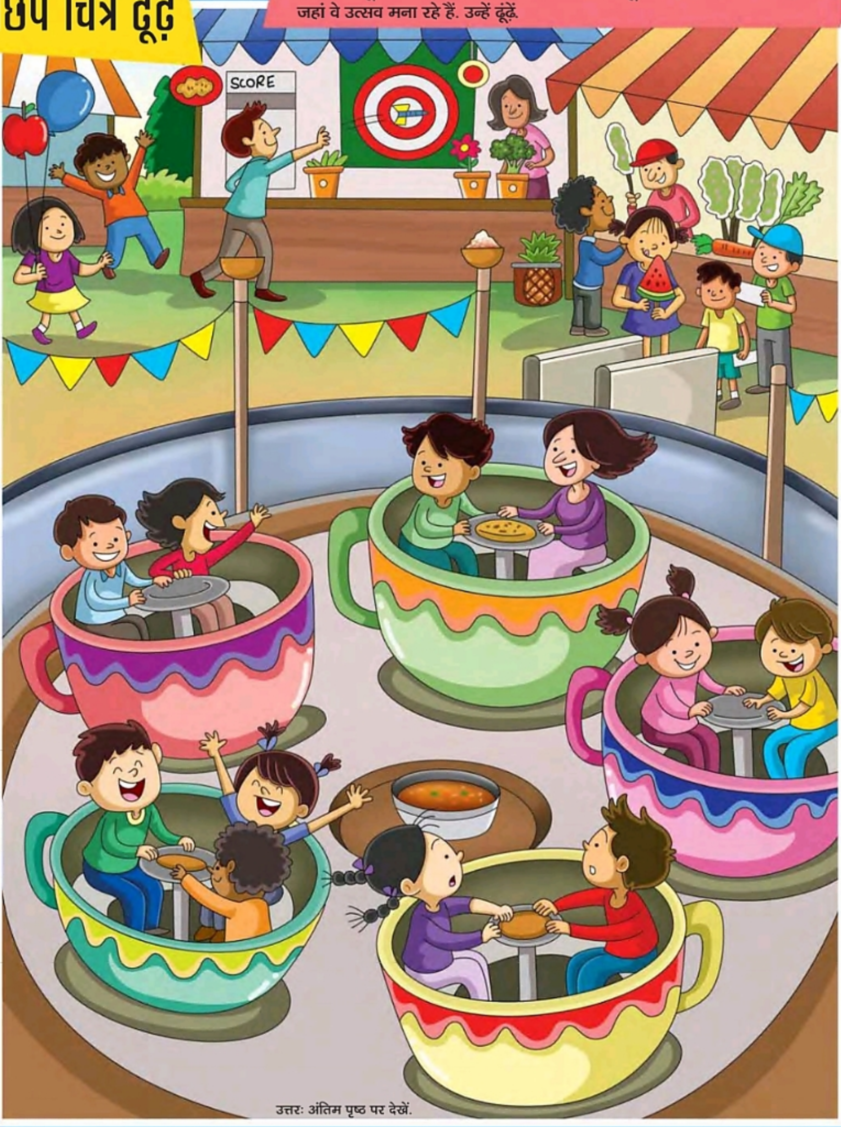

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

देखो हंस न देना

मोहन (मनोज से) : कुत्ते के लिए क्रिकेट में कुछ करने के लिए उस की पसंदीदा चीज क्या होती है?

मनोज : मुझे नहीं पता.

मोहन : बौलिंग.

मनोज : क्यों, कैसे?

मोहन : क्योंकि वह कहता है बौ, बौ.

मोक्षित रेड्डी, 9 वर्ष
बैंगलुरु

गीता (राजू से) : सब से पुराना इंडोरगेम कौन सा है?

राजू : शतरंज (चेस).

गीता : कैसे?

राजू : क्योंकि शतरंज में आज भी काली और सफेद पट्टियां हैं.

भास्कर मुखर्जी, 10 वर्ष
पश्चिम बंगाल

संस्कृति (संस्कार से) : क्या तुम इस पौब्लम को टेबल : 43X45 का इस्तेमाल किए बिना हल कर सकते हो?

संस्कार : हां, मैं कर सकता हूं.

संस्कृति : कैसे?

संस्कार : सीधी सी बात है, मैं इस समस्या को फ्लोर यानी फर्श पर रख कर हल करूंगा.

संस्कृति सिंह, 9 वर्ष
गाजियाबाद

टीचर (छात्र से) : वन टू टेन तक की गिनती सुनाओ.

छात्र : 1, 2, 10.

आसिफ परवेज, 8 वर्ष
पश्चिम बंगाल

हाहाहा हाहाहा हीहीही हीहीही

सीटू (बिट्टू से) : एक फली में कितने मटर होते हैं?

बिट्टू : एक फली में 5 मटर.

अरिजीत मजूमदार, 12 वर्ष
वडोडरा

टीचर (छात्र से) : जब तुम बड़े हो जाओगे तो क्या बनोगे?

छात्र : मैं एक अंतरिक्ष यात्री बनना चाहता हूं.

टीचर : लेकिन तुम जाओगे कहां?

छात्र : सूरज पर.

टीचर : उस पर कैसे जाओगे? सूरज तो बहुत गरम होता है.

छात्र : मैं रात में जाऊंगा.

हर्षिका डोरा, 8 वर्ष
कोलकाता

चिंटू (बंटी से) : प्रश्न 10+10= 11+11 कैसे बराबर है?

बंटी : जैसे 10+10 = 20 होता है वैसे ही 11+11 = 22 होता है.

जियांशी राजगोर, 11 वर्ष
ठाणे

दो मच्छर एक रैस्टोरैंट में गए.

वेटर : आप क्या खाना पसंद करेंगे?

मच्छर : रसोइए को, जो एक्सपर्ट हो.

एस श्रीराम, 9 वर्ष
चैन्नई

कुमुद (विमल से) : एक दिन एक आदमी बारिश में बाहर गया लेकिन उस के बाल जरा भी नहीं भीगे. यह कैसे संभव हो सकता है?

विमल : क्योंकि वह गंजा है.

शुभ हांडा, 10 वर्ष
नोएडा

चीकू (मीशू से) : एक गोल्डफिश को तुम ओल्ड कैसे बनाओगे?

मीशू : गोल्ड से 'ग' को निकाल लो, ओल्ड रह जाएगा.

रिशिथ करंथ, 8 वर्ष
बैंगलुरु

किट्टू (चिंकी से) : एक किंग यानी राजा सीधी लाइन क्यों खींचता है?

चिंकी : क्योंकि वह एक रूलर है.

अद्विक कुमार, 8 वर्ष
मुंबई

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:
चंपक, दिल्ली प्रेस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई - 400031
ईमल : **writetochampak@delhipress.in**
और **SMS: 8657402248**
औनलाइन विजिट करें :
www.facebook.com/ChampakMagazine
https://www.youtube.com/ChampakSciQ

डमरू और नववर्ष का संकल्प

कहानी ● शिवेश श्रीवास्तव

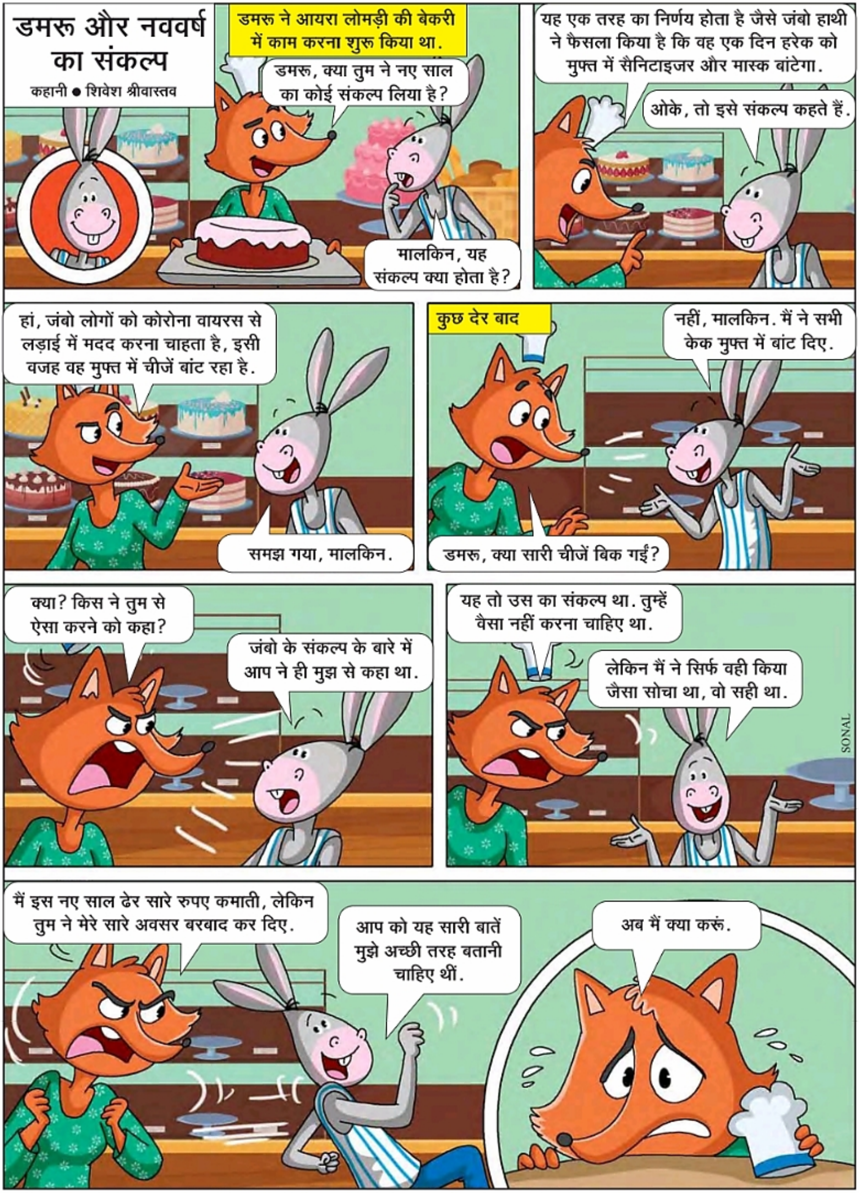
डमरू ने आयरा लोमड़ी की बेकरी में काम करना शुरू किया था.
डमरू, क्या तुम ने नए साल का कोई संकल्प लिया है?
मालकिन, यह संकल्प क्या होता है?
यह एक तरह का निर्णय होता है जैसे जंबो हाथी ने फैसला किया है कि वह एक दिन हरेक को मुफ्त में सैनिटाइजर और मास्क बांटेगा.
ओके, तो इसे संकल्प कहते हैं.
हां, जंबो लोगों को कोरोना वायरस से लड़ाई में मदद करना चाहता है, इसी वजह वह मुफ्त में चीजें बांट रहा है.
समझ गया, मालकिन.
कुछ देर बाद
डमरू, क्या सारी चीजें बिक गईं?
नहीं, मालकिन. मैं ने सभी केक मुफ्त में बांट दिए.
क्या? किस ने तुम से ऐसा करने को कहा?
जंबो के संकल्प के बारे में आप ने ही मुझ से कहा था.
यह तो उस का संकल्प था. तुम्हें वैसा नहीं करना चाहिए था.
लेकिन मैं ने सिर्फ वही किया जैसा सोचा था, वो सही था.
SONAL
मैं इस नए साल ढेर सारे रुपए कमाती, लेकिन तुम ने मेरे सारे अवसर बरबाद कर दिए.
आप को यह सारी बातें मुझे अच्छी तरह बतानी चाहिए थीं.
अब मैं क्या करूं.

नए साल का संकल्प

कहानी ● पारुल माहेश्वरी

श्रुति और प्रणिता बैस्ट फ्रैंड थीं. दोनों एक ही स्कूल और एक ही कक्षा में पढ़ती थीं. श्रुति पढ़ाई में अच्छी थी तो प्रणिता खेलकूद में. भिन्न रुचियों के बावजूद उन की अच्छी मित्रता थी. स्कूल में इस को ले कर अकसर ही सभी को हैरानी होती थी.

उन के बाकी दोस्त अकसर औनलाइन गेम, नई मूवी और कक्षा में अन्य विद्यार्थियों के बारे में ही बात किया करते थे, लेकिन श्रुति और प्रणिता उन सब से अलग थीं.

वे अकसर पढ़ाई के बाद अपने मन की बात एकदूसरे से साझा करती थी. दोनों का ध्यान हमेशा इस बात पर रहता था कि वे उन्हीं मुद्दों पर बात करें जिन से जीवन में उन्हें कुछ सीखने और आगे बढ़ने में मदद मिले.

कोरोना महामारी के चलते जब स्कूल बंद कर दिए गए थे तो न मिलने पर भी उन की दोस्ती कम नहीं हुई थी. अब जब विद्यालय दोबारा खुल गए हैं तो दोनों ही कोरोना गाइडलाइंस का पालन करते हुए ही संवाद करती थीं.

स्कूल में संवाद के नियम सख्त होने के कारण वे आपस में खुलेमन से बातचीत नहीं कर रही थीं, तो इस वीकेंड श्रुति ने प्रणिता को अपने घर मिलने के लिए बुलाया.

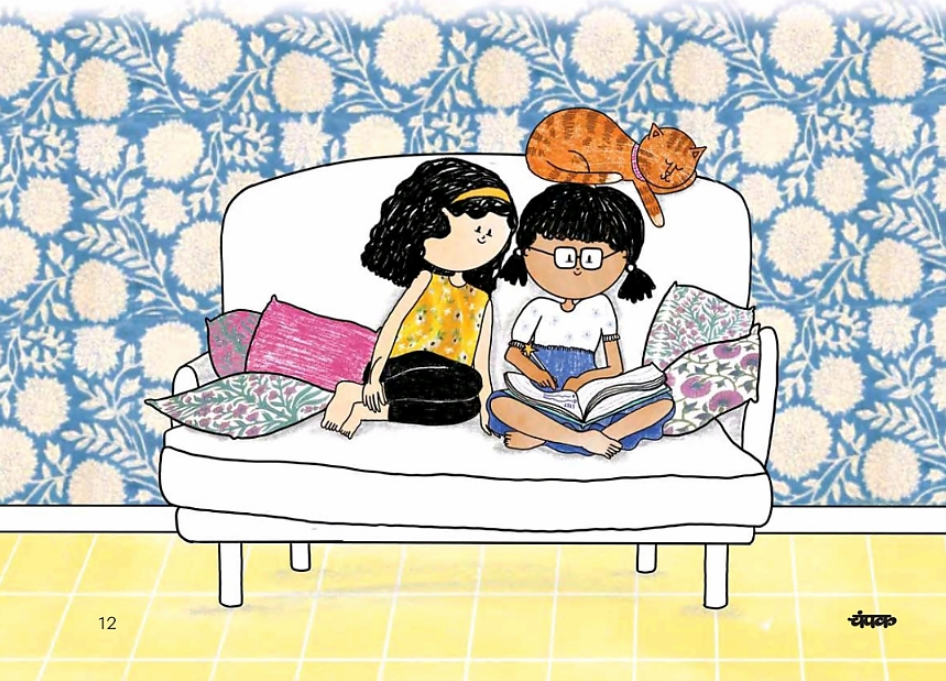

श्रुति और प्रणिता की दोस्ती से घर वाले भी अच्छी तरह परिचित थे. उन के मिलने और आपस में बैठ कर बातचीत करने से घर वालों को भी कोई आपत्ति नहीं थी.

जल्द ही नया साल आने वाला था. सभी तरफ इस का उल्लास नजर आ रहा था. इस बार उन की चर्चा का विषय था कि नए साल में वे नए काम कर सकती हैं.

श्रुति के मम्मीपापा उसे कहीं घुमाने ले जाना चाहते थे तो वहीं प्रणिता के परिवार के सदस्यों का 'गेट टू गेदर' का प्रोग्राम बन रहा था, लेकिन उन दोनों के मन में तो कोई और ही बात चल रही थी.

दोनों फ्रैंड हर साल की तरह इस बार भी अपने आने वाले साल को और बेहतर बनाना चाहती थीं.

श्रुति ने कहा, ''प्रणिता, क्यों न हम इस बार नए साल के साथ अपने नए संकल्पों पर भी चर्चा करें?''

''हां, यह तो बहुत अच्छा होगा. मैं भी यही सोच रही थी. इस बार हमें कुछ नए तरह के संकल्प लेने चाहिए जो हमारे जीवन को बेहतरी की तरफ ले जाएं. अगर हम इन्हें चर्चा करने के साथ लिखते भी चलें तो और भी अच्छा होगा,'' प्रणिता ने कहा.

''हां, यह बात एकदम सही है. हम उन्हें लिख लेना चाहिए,'' श्रुति ने कहा और एक डायरी और पैन निकाल लिया.

''प्रणिता, इस साल तुम जरा बड़े संकल्पों की बात करना, यह नहीं कि पिछले सालों की तरह हम समय पर सो कर उठेंगे, टीवी कम देखेंगे, बड़ों का सम्मान करेंगे, अपने काम खुद करेंगे,'' श्रुति बोली.

''नहीं श्रुति, मैं भी यह सब नहीं दोहराना चाहती हूं. यह सब तो अब हमारी आदत में शामिल हो चुका है. मैं खुद अब इन से आगे बढ़ना चाहती हूं,'' प्रणिता ने कहा.

''चलो, हम शुरुआत करते हैं. श्रुति सब से पहले लिखो कि हम अपनी दिनचर्या में किसी एक कला को भी शामिल करेंगे. हां, मैं कब से हारमोनियम बजाना सीखना चाहती हूं, पर इस वर्ष हम जरूर सीखेंगे,'' प्रणिता ने कहा.

''लेकिन यह होगा कैसे?'' श्रुति ने पूछा.

''अरे, तुम लिखो. हम कोई टीचर ढूंढ़ लेंगे, नहीं तो औनलाइन सीख लेंगे. वैसे भी कोविड के बाद अब बहुत से कोर्स औनलाइन भी उपलब्ध हैं,'' प्रणिता ने अपनी बात रखते हुए कहा.

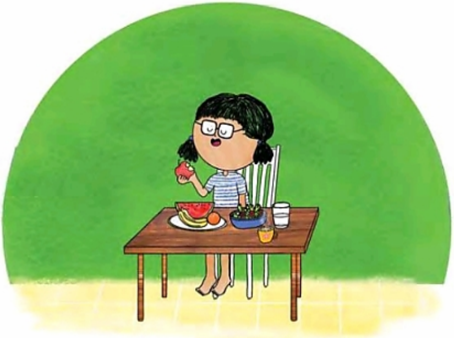

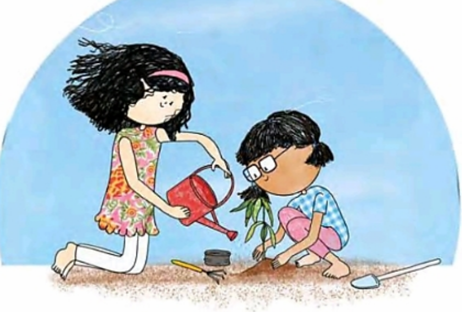

''प्रणिता, मैं सोच रही हूं, क्यों न हम पढ़ाई के अलावा किसी एक नए विषय के बारे में भी जानकारी हासिल करें.''

''हां, इस से हमारे ज्ञान में भी बढ़ोतरी होगी और समय का भी सदुपयोग होगा,'' प्रणिता ने कहा.

''तुम सही कह रही हो, प्रणिता. इसे भी लिखो.''

''श्रुति, हम इतना कुछ करने की सोच रहे हैं तो इस के लिए हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए कि हम अपने खानपान पर भी ध्यान दें. सेहतमंद और संतुलित भोजन को अपने आहार में शामिल करें. यह भी लिखना बनता है. प्रणिता, पर हफ्ते में एक बार तो हम धोखा खा सकते हैं.''

''हां, भई, वह तो होगा ही,'' प्रणिता ने पलकें झपकाईं.

''पर्यावरण और पशुओं की जान बचाना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए. अपने स्तर पर हम जो भी कर सकते हैं, वह हमें करना चाहिए. पौधे लगाने के साथ उन की देखभाल करना, पानी का दुरुपयोग नहीं करना, पौलीथिन का इस्तेमाल नहीं करना.''

''यह सब बहुत अच्छा है श्रुति, कृपया उन सभी को लिख लें.''

''प्रणिता, मेरे दिमाग में भी एक संकल्प आया है.''

''हां, बताओ वह क्या है?''

''कहते हैं कि दुनियाभर की ज्ञान की बातें हमारे प्राचीन ग्रथों जैसे रामायण, महाभारत और उपनिषदों में हैं. क्यों न हम थोड़ा समय निकाल कर अभी से उन्हें पढ़ना शुरू करें, साथ ही हमें अच्छा साहित्य भी पढ़ना चाहिए. चलो, कुछ किताबें पढ़ते हैं.''

''मैं सहमत हूं, श्रुति. मेरी मम्मी ने तो मुझे लौकडाउन के दौरान किताबें पढ़ने की सलाह दी. तब मैं ने उन की बात पर अमल नहीं किया, लेकिन अब हमें यह जरूर करना चाहिए.''

''हम चाहें तो वीकेंड पर भी इन किताबों को पढ़ सकते हैं, प्रणिता.''

''अच्छा श्रुति, अब मैं चलती हूं, समय काफी हो गया है. हमारा आज का मिलने का उद्देश्य भी पूरा हो गया है. अब हम अपने लिखे संकल्पों का पालन भी शुरू कर देंगे.''

''हां, वह तो हमें करना ही है, प्रणिता.''

''यह बहुत अच्छा रहा श्रुति, अब कल मिलेंगे,'' प्रणिता ने श्रुति से विदा ली. ●

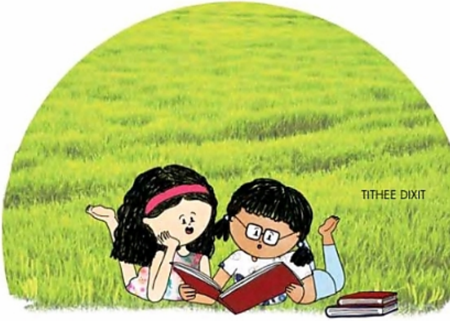
TITHEE DIXIT

मजेदार विज्ञान

टूथपिक्स से एक स्टार बनाएं

आइए, पता करते हैं कि कैसे पानी वस्तुओं को आगे बढ़ा या घुमा सकता है.

आप को चाहिए :

- 5 लकड़ी के टूथपिक्स
- पानी ● एक ड्रौपर

ऐसा करें :

1. धीरेधीरे टूथपिक्सों को तब तक मोड़ते जाएं, जब तक कि वे क्रैक यानी फट न जाएं और ‘V’ का आकार न बना लें, लेकिन ध्यान रहे कि वे पूरी तरह न टूटें.

2. टूटे हुए छोरों के साथ एकदूसरे से छूते हुए उन्हें सजाएं. पांच बिंदु वाले एक स्टार के जैसा आकार बनना चाहिए जैसा चित्र में है.

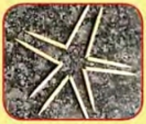

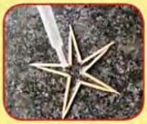

3. ड्रौपर में थोड़ा सा पानी लें और धीरेधीरे स्टार के बीच में कुछ बूंदें गिरा दें. यह सुनिश्चित करें कि सभी टूटे हुए छोरों को पानी छू रहा हो.

सोचें :

टूथपिक्स कैसे चलने लगते हैं?

टूथपिक्स लकड़ी के बने होते हैं और जब उन को मोड़ा गया तो लकड़ी के कुछ फाइबर खींच कर लंबे हो गए. जब ये एक्सपोज्ड यानी बाहर निकले लकड़ी के फाइबर्स जो टूटे हुए मोड़ के पास होते हैं, पानी के संपर्क में आते हैं तो एक प्रक्रिया जिसे कैपीलियरी ऐक्शन यानी केशिका प्रक्रिया कहते हैं, के माध्यम से इसे अवशोषित यानी सोखना शुरू करते हैं, यह केशिका प्रक्रिया एक ऐसी प्रक्रिया है जिस के द्वारा तरल पदार्थ एक ठोस पदार्थ में स्पंज की तरह या एक खाली ट्यूब की तरह ऊपर चढ़ने लगता है. लकड़ी जितना ज्यादा पानी सोखेगी, मुड़े हुए फाइबर्स उतने ही ज्यादा फैलेंगे और सीधे होने शुरू हो जाएंगे. जब वे सीधे हो जाते हैं तो टूथपिक्स के छोर एकदूसरे को धकेलना शुरू कर देते हैं और टूथपिक्सों के सभी छोर एकदूसरे को धकेलते हैं, जोकि एक ही समय में हो रहा होता है, तो स्टार बन जाता है.

देखें :

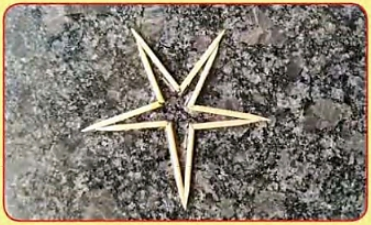

जब आप पानी की बूंदों को गिराना जारी रखते हैं तो सभी टूथपिक्स घूमना शुरू कर देते हैं और टूथपिक्स एक उचित स्टार जैसा बन जाता है.

पता करें :

मोमबत्ती कैसे जलती रहती है?

जब हम एक माचिस की तिल्ली को मोमबत्ती की बत्ती के पास ले जाते हैं, तो इस के ऊपर की मोम पिघलती है और उस के बाद यह भाप में बदल जाती है, जो हवा में मौजूद औक्सीजन से जा मिलती है और उस के बाद प्रज्वलित यानी जल पड़ती है, क्योंकि माचिस की तिल्ली में लौ जल रही होती है. इस तरह मोमबत्ती जलती है. चूंकि बत्ती के ऊपर की लौ मोमबत्ती के मोम को पिघलाना जारी रखती है, इसलिए पिघली हुई मोम केशिका प्रक्रिया यानी कैपीलियरी ऐक्शन द्वारा ऊपर की ओर जाती रहती है. जब यह पिघली मोम ऊपर चोटी पर जाती है, तब यह भाप में बदल जाती है और जलना शुरू हो जाती है. यह कार्य तब तक जारी रहता है जब तक कि मोमबत्ती का मोम समाप्त नहीं हो जाता है.

बताओ तो जानें

1. तीन अक्षर का मेरा नाम
दो अक्षर वाले मेरे अंदर होते
छोटी सी राशि भुगतान कर
मुझे दुनिया में कहीं भी भेजो.

2. मैं बोल नहीं सकता हूं
तुम मुझे देख नहीं सकते
लेकिन मैं जवाब देता हूं
पहाड़ों पर जब कोई चिल्लाए.

3. अगर मैं तुम्हारे पास रहूं
मुझे तुम साझा नहीं करते
अगर मुझे साझा किया तो
मैं तुम्हारे पास नहीं रहूंगा.

4. दीवारों को मैं चमकाता
अलगअलग रंगों में आता
तुम्हें मुझे लगाना होगा
जब मैं गीला रहता हूं.

देखें तुम कितना जानते हो

1. अंतरिक्ष में जाने वाले पहले भारतीय कौन थे?
   - (क) सुनीता विलियम्स
   - (ख) राकेश शर्मा
   - (ग) कल्पना चावला
   - (घ) सिरिशा बांडला

2. गुब्बारों में इन में से कौन सी गैस भरी जाती है?
   - (क) नाइट्रोजन
   - (ख) आर्गन
   - (ग) औक्सीजन
   - (घ) हीलियम

3. लाफिंग यानी हंसाने वाली गैस कौन सी है?
   - (क) नाइट्रस औक्साइड
   - (ख) कार्बन मोनोऔक्साइड
   - (ग) सल्फर डायऔक्साइड
   - (घ) हाइड्रोजन पेरोऔक्साइड

4. भारत के लौहपुरुष के रूप में किन्हें जाना जाता है?
   - (क) गोविंद बल्लभ पंत
   - (ख) जवाहर लाल नेहरू
   - (ग) सरदार बल्लभ भाई पटेल
   - (घ) सुभाषचंद्र बोस

उत्तर (बताओ तो जानें) : 1–लिफाफा, 2–इको ध्वनि, 3–रहस्य, 4–पेंट (रंग).
उत्तर (देखें कितना जानते हो?) : 1–ख, 2–घ, 3–क, 4–ग.

जलवायु परिवर्तन पर बहस

कहानी ● कुमुद कुमार

''ओह, मिस निम्मी किसी और को नहीं दे सकती थी इतना मुश्किल प्रोजैक्ट?'' टिगो टाइगर ने झल्लाते हुए कहा.

''टिगो, तुम हमेशा मुश्किल काम से घबरा जाते हो. अरे, वे बहादुर होते हैं जिन्हें मुश्किल काम के लिए चुना जाता है,'' सैली गिलहरी ने एक हाथ ऊपर उठाते हुए कहा.

''सैली, तुम सही कहती हो. टिगो तो डरपोक है. हम भाग्यशाली हैं कि मिस निम्मी ने हमें कोप-26 प्रोजैक्ट तैयार करने के लिए चुना है. यह इतना महत्त्वपूर्ण प्रोजैक्ट है, जिस पर पूरे ग्रहों का भविष्य टिका है, हम चारों साथी इसे मिल कर पूरा करेंगे,'' गीगी जिराफ ने अपनी गरदन उचकाते हुए कहा.

''बिलकुल, हम चारों साथी मिल कर इस प्रोजैक्ट को शानदार तरीके से पूरा करेंगे. इस में डरने की कोई बात ही नहीं है,'' मोमो चूहे ने अपनी दुम लहराते हुए कहा.

अपने साथियों की हिम्मत देख कर टिगो का हौसला भी बढ़ गया. उस ने कहा, ''दोस्तो, तुम्हारी बातों ने मेरी भी हिम्मत बढ़ा दी है. सच, तुम जैसे बहादुर दोस्त साथ हों तो कोई भी काम मुश्किल नहीं है. जलवायु संबंधी अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन कोप-26 के बारे में भले ही हमें अभी कुछ ज्यादा जानकारी नहीं है, लेकिन दो दिन में हम इस की पूरी तैयारी करेंगे. फिर हम भी अपना सम्मलेन करेंगे और अपनी जानकारी साझा करेंगे.''

''अरे टिगो, तुम्हारे अंदर भी हमारी बात सुन कर हिम्मत आ गई, बहुत बढ़िया. अब तो काम हुआ समझो,'' मोमो ने मुसकराते हुए कहा.

चारों दोस्तों ने एकदूसरे के हाथ पर हाथ रख कर एकजुटता दिखाई और दो दिन बाद पूरी तैयारी के साथ मिलने का वादा किया.

घर जा कर चारों दोस्त पत्रपत्रिकाओं को उलटनेपलटने लगे और गूगल पर सर्च करने लगे. अपने दोस्तों और बड़ों से वे कोप-26 के बारे में जानकारी जुटाने लगे. जो काम उन्हें पहले बहुत मुश्किल लग रहा था, दो दिन की कड़ी मेहनत के बाद वही काम सहज और सरल लगने लगा. अब

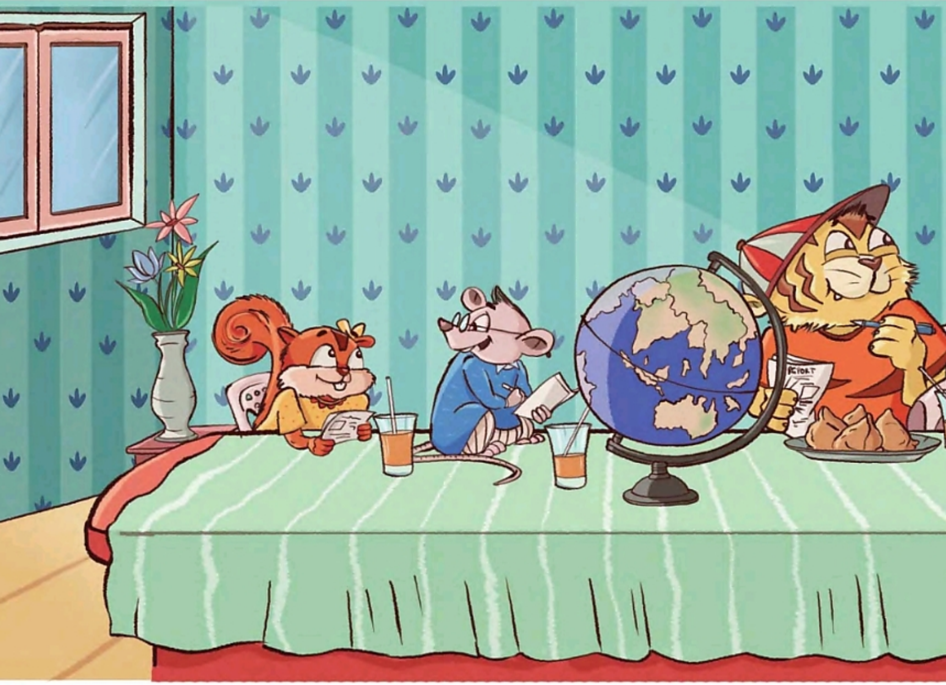

इस काम में उन्हें आनंद आने लगा. अब तो अपनी जानकारी साझा करने के लिए चारों बेसब्री से इंतजार करने लगे.

दो दिन बाद सभी दोस्त गीगी जिराफ के घर पर इकट्ठे हो गए. मोमो ने डायरी में नोट्स लिखने शुरू किए. सैली संचालन करने लगी, जिस से फालतू बहस न हो.

‘‘देखो दोस्तो, हम सब ने कोप-26 पर काफी जानकारी इकट्ठी कर ली है. हम में से कुछ जलवायु परिवर्तन पर भी अपने विचार रखेंगे. हम सब एकएक कर के बिंदुवार अपनी बात कहेंगे. मोमो उन बिंदुओं को अपनी डायरी में नोट कर लेगा, जिस से हमें प्रोजैक्ट तैयार करने में आसानी होगी. चलिए, शुरू करते हैं इस प्रोजैक्ट को. सब से पहले हमें यह जानना होगा कि आखिर कोप-26 है क्या?’’ सैली ने संचालन शुरू करते हुए कहा.

टिगो ने हाथ उठाया और कहा, ‘‘असल में कोप-26 जलवायु संबंधी समस्याओं को ले कर आयोजित होने वाला एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन है. चूंकि यह संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) का 26वां सम्मलेन था, इसलिए यह कोप-26 कहलाया. पहला सम्मलेन 1995 में जर्मनी की राजधानी बर्लिन में हुआ था. कोप अर्थात सीओपी अंग्रेजी के कान्फ्रेंस औफ पार्टीज का संक्षिप्त रूप है.’’

‘‘अरे वाह, टिगो, तुम ने तो गागर में सागर भर दिया. इतने अच्छे ढंग से तुम ने कोप-26 की प्रस्तावना रखी. अब कोई यह बताए कि यह सम्मलेन कब और कहां आयोजित हुआ?’’ सैली ने पूछा.

गीगी ने हाथ उठाते हुए कहा, ''इस बार यह सम्मेलन स्कौटलैंड के ग्लासगो नगर के सैक सैंटर में 31 अक्टूबर से 13 नवंबर, 2021 तक आयोजित हुआ. इस में दुनिया के 197 देशों ने भाग लिया.''

''अरे, वाह गीगी, अब कोई हमें यह बता सकता है कि इस सम्मलेन का आयोजन किस ने किया और इस का अध्यक्ष कौन था?''

इस बार मोमो का चेहरा खिल उठा. वह अपनी कुरसी से उठ कर खड़ा हुआ और बोला, ''इस सम्मलेन का आयोजन यूनाइटेड किंगडम और इटली ने संयुक्त रूप से किया. इस के अध्यक्ष थे ब्रिटेन के उद्योगपति और ऊर्जा मंत्री आलोक शर्मा. आलोक शर्मा का संबंध भारत के आगरा शहर से भी है.''

''अरे, वाह मोमो, अब कोई हमें बता सकता है कि इस सम्मलेन का उद्देश्य क्या था?'' बैठक को आगे बढ़ाते हुए सैली ने पूछा.

''वाह सैली वाह, अगर सब प्रश्नों के उत्तर हम ही देंगे तो फिर तुम क्या करोगी? इस का जवाब तो तुम को ही देना होगा,'' टिगो ने उंगली का इशारा करते हुए कहा तो सब ने उस की हां में हां मिलाई.

''अरे, मैं जवाब देने से मना कब कर रही हूं?'' सैली ने सफाई पेश करते हुए कहा.

''तो तुम किसी प्रश्न का जवाब दे भी तो नहीं रही हो,'' मोमो ने अपनी पूंछ लहराते हुए कहा.

''ठीक है, ठीक है, मैं इस का जवाब देती हूं. नहीं तो तुम सब को लगेगा जैसे मैं कोई तैयारी कर के नहीं आई हूं.''

''तो फिर देर किस बात की, बोलो न?'' गीगी ने सैली को चिढ़ाते हुए कहा.

सैली ने सोचा कि यदि उस ने बोलने में देरी की तो उस के दोस्त उसे चिढ़ाएंगे. इसलिए उस ने मोर्चा संभालते हुए कहा, ''देखो दोस्तो, इस सम्मलेन का उद्देश्य खतरनाक जलवायु परिवर्तन पर चिंतन करना ही नहीं था, बल्कि इस का उद्देश्य सदी के अंत तक कार्बन उत्सर्जन को शून्य पर लाना, धरती के तापमान में 1.5 डिग्री सेल्सियस की कमी लाना, ग्रीन हाउस इफैक्ट्स को कम करना और कोयले के प्रयोग को चरणबद्ध तरीके से बंद करना भी है. कोयले को धरती का तापमान बढ़ाने के लिए जिम्मेदार माना जाता है. धरती के प्रदूषण को बढ़ाने में कोयले का योगदान 40 प्रतिशत से भी अधिक है.''

टिगो बीच में ही बोल पड़ा, ''लेकिन मुझे बताओ कि यदि भारत जैसा देश कोयले के प्रयोग को बंद कर देगा तो उस के बिजली घर और कारखाने कैसे चलेंगे? बताओ तो जरा?''

गीगी ने कहा, ''तुम सही कहते हो टिगो, तभी तो भारत, चीन और कुछ अन्य विकासशील देशों ने भी कोयले के प्रयोग को बंद करने पर अपना विरोध जताया है. दुनियाभर में 2,500 बिजली घर कोयले से चलते हैं जिन में से 1,082 चीन और 281 भारत में हैं. भारत में सीमेंट, इस्पात आदि के कारखाने भी कोयले से चलते हैं, जबकि विकसित देशों में बिजली गैस और पवन ऊर्जा से बनाई जाती है.''

''तो फिर इस पर सम्मलेन के अध्यक्ष आलोक शर्मा की क्या प्रतिक्रिया थी?'' टिगो ने पूछा.

''अरे, वह तो बड़े दुखी हुए. वे भारत और चीन के विरोध पर मुश्किल से ही अपने आंसू रोक पाए. लेकिन उन्होंने यह नहीं सोचा कि विकासशील देशों की अपनी समस्याएं हैं. हां, यदि विकसित देश विकासशील और गरीब देशों की मदद करें तो समस्या सहज ढंग से सुलझ सकती है,'' गीगी ने अपना तर्क दिया.

टिगो ने कहा, ''यही तो बड़ी समस्या है. विकसित और अमीर देश प्रदूषण तो वायुमंडल में सब से ज्यादा फैलाते हैं, लेकिन आर्थिक मदद और तकनीक साझा करने पर मुकर जाते हैं.''

मोमो बहस में कैसे पीछे रहता? उस ने एक नेता की तरह भाषण देना शुरू कर दिया, ''दोस्तो, 2009 के सम्मलेन में विकसित देशों ने जलवायु प्रदूषण को कम करने के लिए विकासशील देशों को 10 हजार करोड़ रुपए देने का वादा किया था, लेकिन यह वादा आज तक पूरा नहीं किया गया. वे विकासशील देशों की समस्याओं को नहीं समझते. अकेले भारत को हर वर्ष तेल और गैस आयात करने के लिए साढ़े 7 लाख करोड़ रुपए खर्च करने पड़ते हैं. हमारे यहां कोयला प्रचुर मात्रा में है तो फिर हम कोयला क्यों न इस्तेमाल करें?''

सैली ने मोमो को टोकते हुए कहा, ''मोमो, हम अपने प्रोजैक्ट पर काम कर रहे हैं न कि भाषणबाजी की कोई प्रतियोगिता. अब हमें यह देखना होगा कि इस सम्मलेन में आगे क्या हुआ?''

गीगी ने कहा, ''सम्मलेन का अगला उद्देश्य 2030 तक जलवायु प्रदूषण को घटा कर 2,640 करोड़ टन के स्तर तक लाने का है, लेकिन दुनिया के देशों की परियोजनाओं को देख कर तो ऐसा लगता है कि

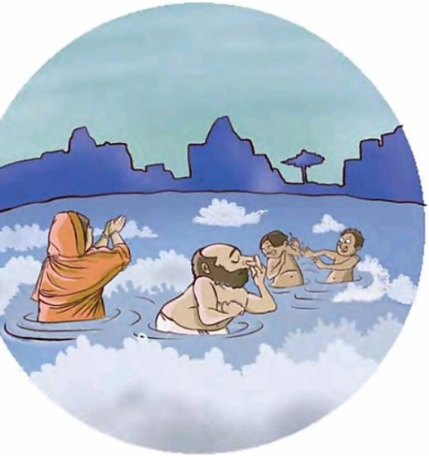

यह स्तर घटने के बजाय बढ़ जाएगा.''

''तब तो बात बनने के बजाय और बिगड़ जाएगी,'' मोमो ने फिर से बीच में टोका.

सैली ने उसे रोकते हुए कहा, ''यह तो हम सब को पता है कि दुनिया भयावह प्रदूषण का सामना कर रही है, लेकिन हमें इस के कारण और समाधान को ढूंढ़ना ही होगा.''

टिगो ने कहा, ''इस प्रदूषण का मुख्य कारण पैट्रोल और डीजल से चलने वाले वाहन, कोयले का अंधाधुंध प्रयोग, विमानों का ईंधन जलाना, भवन निर्माण और पराली का जलाना इत्यादि है.''

''तुम ने सही कहा टिगो. हमारे बड़े शहर वायु प्रदूषण के कारण गैस चैंबर बन चुके हैं. दिल्ली में यमुना जहरीले पानी और झागों का नाला बन चुकी है. यही हाल बड़े शहरों से गुजरने वाली अन्य नदियों का भी है,'' मोमो ने टिगो का समर्थन करते हुए कहा.

सैली बोली, ''हमें अब काफी सारी जानकारी मिल चुकी है. अब अंतिम बिंदु बाकी है. इस जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण के निवारण के लिए हमारे क्या सुझाव हो सकते हैं?''

गीगी ने कहा, ''इस मामले में हम बच्चे सब से अच्छे हैं. हम साइकिल चलाते हैं जिस से बिलकुल भी प्रदूषण नहीं होता है. बड़ों को भी बच्चों की तरह साइकिल का प्रयोग करना चाहिए.''

मोमो ने कहा, ''हमें बिजली का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए और जितना हो सके सार्वजनिक वाहनों का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए,'' निजी वाहनों का बहुत अधिक आवश्यकता होने पर ही इस्तेमाल करना चाहिए.''

टिगो उछलता हुआ बोला, ''और हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए.''

''बिलकुल सही बच्चो, प्रदूषण रोकने के जितने भी उपाय हो सकते हैं, वे हम को करने चाहिए. सब से जरूरी है हम सब का जागरूक होना. आप का प्रोजैक्ट जरूर अच्छा बनेगा. आप ने बहुत मेहनत की है, इसलिए लो गरमागरम पकोड़े खाओ और चाय पिओ.''

टिगो की मां हाथ में ट्रे लिए दरवाजे पर खड़ी थी. बच्चों ने उन्हें मुसकराते हुए धन्यवाद दिया. वे चाय पीने और गरमागरम पकौड़े खाने के साथसाथ अपने प्रोजैक्ट को अंतिम रूप देने में लग गए. ●

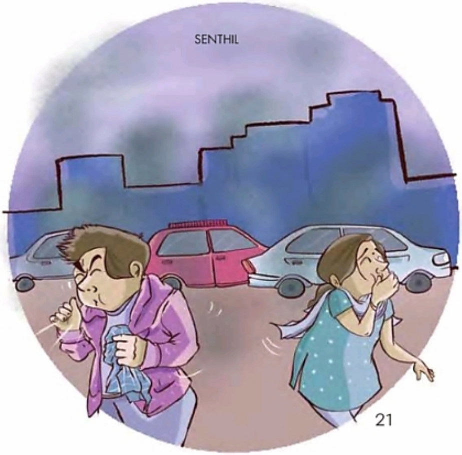

पृथ्वी की रक्षा करें

हमारे पाठकों ने कोप-26(COP-26) और जलवायु परिवर्तन पर अपने विचार साझा किए.

ग्रेटा थनबर्ग ने सचमुच मुझे प्रेरित किया. मुझे जलवायु परिवर्तन और उस के प्रभाव के बारे में तब दिलचस्पी हुई जब मैं ने देखा कि वह क्या करती है. कोप 26 (COP26) सभी देशों को एकजुट होने और जलवायु परिवर्तन के खिलाफ एकसाथ मिल कर लड़ने की दिशा में बढ़ने का एक अच्छा कदम है.

निकुंज गांधी, 12 वर्ष, मुंबई

कोप-26 एक सम्मेलन है जहां बहुत सारे देश इकट्ठा होते हैं और निर्णय करते हैं कि ग्रह यानी पृथ्वी को बचाने के लिए क्या किया जाना चाहिए. जो देश इस तरह के फैसलों को नहीं मानते हैं यानी इस निर्णय को तवज्जो नहीं देते उन के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए.

करन वोहरा, 13 वर्ष, ओडिशा

मैं सभी देशों से आग्रह करूंगा कि वे अपने विरोध को एक किनारे रख दें और सिर्फ पृथ्वी को बचाने की ओर अपने ध्यान को केंद्रित करें. हमें अगर यह पता चल जाए कि हमारा ग्रह खतरे में है, पीड़ित है तो हम अपने भविष्य की योजना नहीं बना सकेंगे.

महेश बानू, 12 वर्ष, चैन्नई

हमारी पर्यावरणीय क्लास में हमें हाल ही में जलवायु परिवर्तन पर एक छोटी सी प्रस्तुति देने के लिए कहा गया था. जब टीचर ने जलवायु परिवर्तन के मामले में यूएन सम्मेलन के बारे में बताया, तो हमें विश्वास हो गया कि यह सभी देशों के लिए सब से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है कि वे एकजुट हो जाएं और जलवायु परिवर्तन को नियंत्रण करने की दिशा में काम करें, क्योंकि किसी एक व्यक्ति या देश द्वारा इस दिशा में काम करना आसान नहीं है और न ही किया जा सकता है.

व्रज गांधी, 15 वर्ष, मुंबई

हमें एकजुट हो कर जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ना होगा. महामारी के दौरान मेरे सहपाठी और मैं ने सिंगलयूज यानी एक बार इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक उत्पादों को दरकिनार कर टिकाऊ उत्पादों में दिलचस्पी ली थी और अब भी ऐसा करना हम जारी रखे हुए हैं. मैं अपने क्लास टीचर से कोप-26 सम्मेलन के पीछे का महत्त्व और कारण को विस्तार से बताने के लिए कहा करूंगा.

हिरल पटेल, 13 वर्ष, मुंबई

स्कूल और घर पर हम पृथ्वी की सुरक्षा के तरीकों को सीखते हैं. हम इस ग्रह पर रहते हैं और यह देखना पसंद नहीं करेंगे कि हमारा ग्रह हमारे कार्यों की वजह से मर रहा हो. हम कार का इस्तेमाल बिलकुल ही नहीं करते हैं. हम नजदीकी स्थानों पर पैदल जाते हैं और अगर हमें यात्रा करनी भी पड़े तो हम सब से पहले सार्वजनिक वाहनों को चुनते हैं.

समीक्षा जी, 10 वर्ष, अहमदाबाद

याददाश्त बढ़ाएं

चित्र को देखिए और निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए.

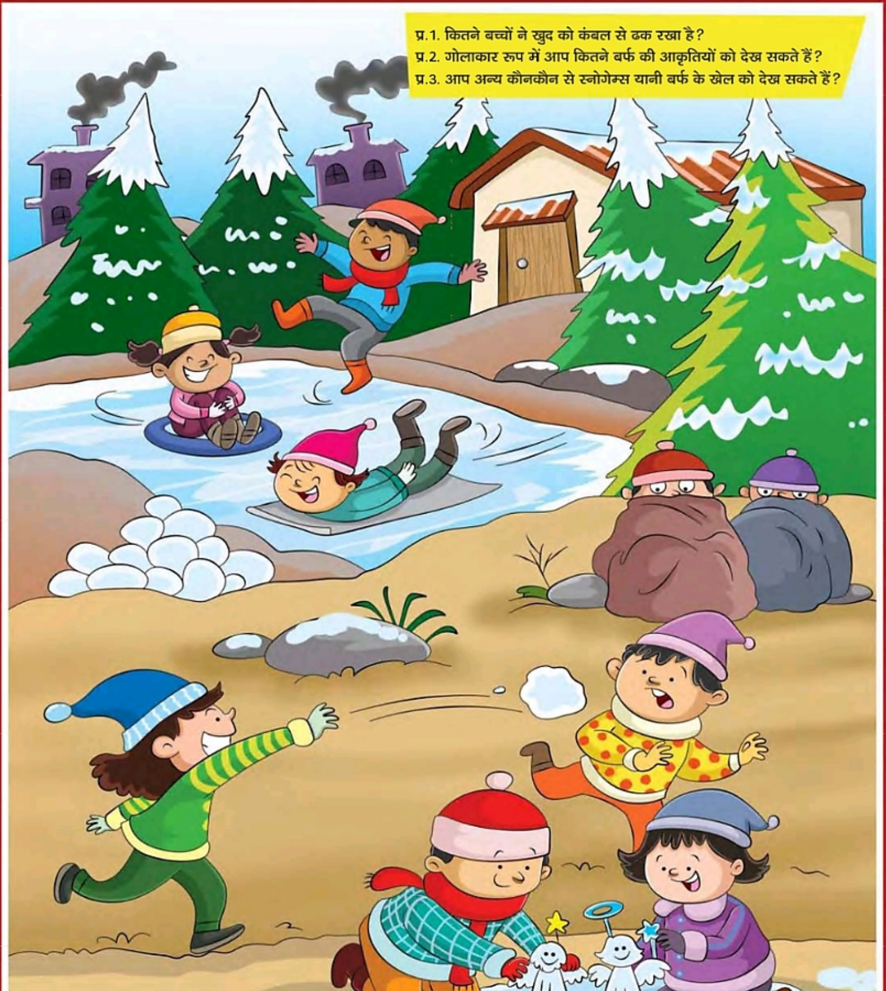

प्र.1. कितने बच्चों ने खुद को कंबल से ढक रखा है?

प्र.2. गोलाकार रूप में आप कितने बर्फ की आकृतियों को देख सकते हैं?

प्र.3. आप अन्य कौनकौन से स्नोगेम्स यानी बर्फ के खेल को देख सकते हैं?

मौमी की मुलाकात

कहानी ● वंदना श्रीवास्तव

यह घटना छत्तीसगढ़ राज्य के जिला बस्तर की है.

सर्दी की सुबह थी. मौमी ने आंखें खोलीं. उस ने जम्हाई लेते हुए अपने पति बलुआ को आवाज दी, ''उठो, सुबह हो गई है. आज महुआ लेने नहीं जाना है क्या?''

जंगल ही तो उन की रोजीरोटी था. उसी के सहारे उन का जीवन चल रहा था, अगर वे थोड़ा सा आलस कर जाएं तो शाम का भोजन भी नहीं मिलता. बलुआ ने इस बारे में सोचा और अलसाते हुए उठा, मुंह पर पानी के छीटें मारे, अपना कंबल ओढ़ा और टोकरी ले कर जंगल की ओर निकल पड़ा.

उस ने जाने से पहले मौमी से कहा, ''तुम अपना काम निबटा कर जल्दी से जंगल आ जाना. मैं जल्दी ही अंधेरे में सारा महुआ इकट्ठा कर लूंगा, नहीं तो कोई और ले जाएगा,'' बोलते हुए बलुआ तेजी से घर से निकल पड़ा.

सारा जंगल महुआ के फूलों की खुशबू से महक रहा था. बलुआ और मौमी जमीन पर गिरे महुआ के फूलों को इकट्ठा करते, उन्हें उठा कर समेटते और

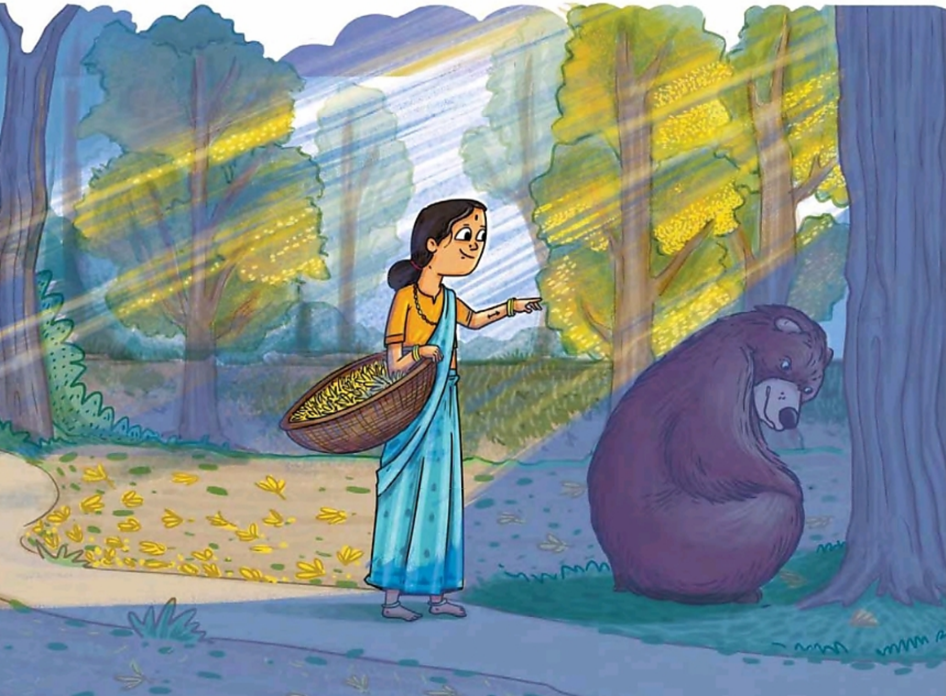

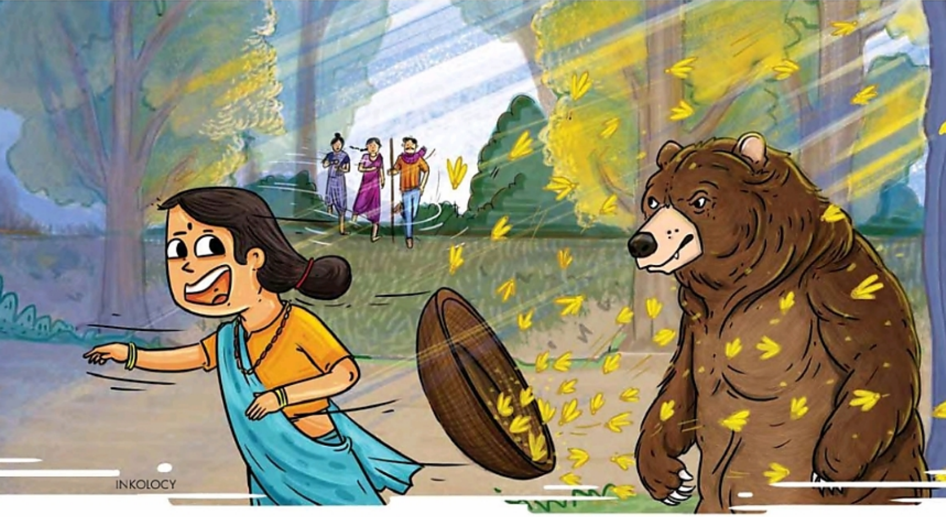

INKOLOCY

घर ला कर सुखाते फिर बाजार जा कर बेच देते. यह बलुआ व मौमी के जीवन का हिस्सा था, इन्हीं जंगल की चीजों से उन का पेट भरता था. इस के लिए वे बहुत परिश्रम करते थे.

मौमी ने जल्दीजल्दी घर का काम निबटाया और अपनी बड़ी सी टोकरी ले कर जंगल की ओर चल पड़ी. अभी बहुत अंधेरा था मौमी जंगल पहुंच गई. पूरा जंगल महुवे से भरा पड़ा था. वे अपने पति बलुआ को खोजने लगी.

''बलुआ, बलुआ,'' उस ने आवाज दी. वह सोच रही थी कि बलुआ किस ओर निकल गया? हम तो हर दिन ही इधर आते हैं. अचानक उस की नजर एक पेड़ के नीचे पड़ी. उसे लगा बलुआ ठंड के कारण कंबल ओढ़ कर यहीं बैठ गया है. अंधेर में वह उस के पास गई तथा पीछे से उस की पीठ थपथपाई और कहा, ''तुम्हें नींद आ रही है क्या?''

सर्दी भी बहुत ज्यादा थी, लेकिन यह क्या उस के हाथ से महुवे की टोकरी छूट कर गिर गई. वह डर के मारे जोर से चिल्लाने लगी. वह बलुआ नहीं, बल्कि जंगली भालू था जो महुवे की खुशबू से महुवा खाने पेड़ के नीचे आ कर बैठ गया था. उसे अंधेरे में वह अपना पति समझ बैठी थी, वह जोरजोर से चिल्लाई और लोगों को मदद के लिए पुकारा. तब तक अंधेरा भी थोड़ा कम हो चुका था.

आसपास के जंगल के लोग भी इकट्ठे हो गए थे बलुआ भी अपनी महुवे की टोकरी ले कर वहां पहुंच गया था.

उन्होंने भालू को भगाया और जंगल से अपने घरों को चल दिए.

मौमी खुश थी कि वह सुरक्षित थी. भालू उस पर हमला कर सकता था, क्योंकि वह अकेली थी.

वह दोनों महुआ के फूलों से भरी अपनी टोकरी ले कर घर की ओर चल पड़े. ●

महुआ एक प्रकार का फूल है. ये पेड़ से जमीन पर गिरता है और खाने के काम आता है. इस फूल से तेल भी निकाला जाता है.

चीकू

चित्रकथा : दास

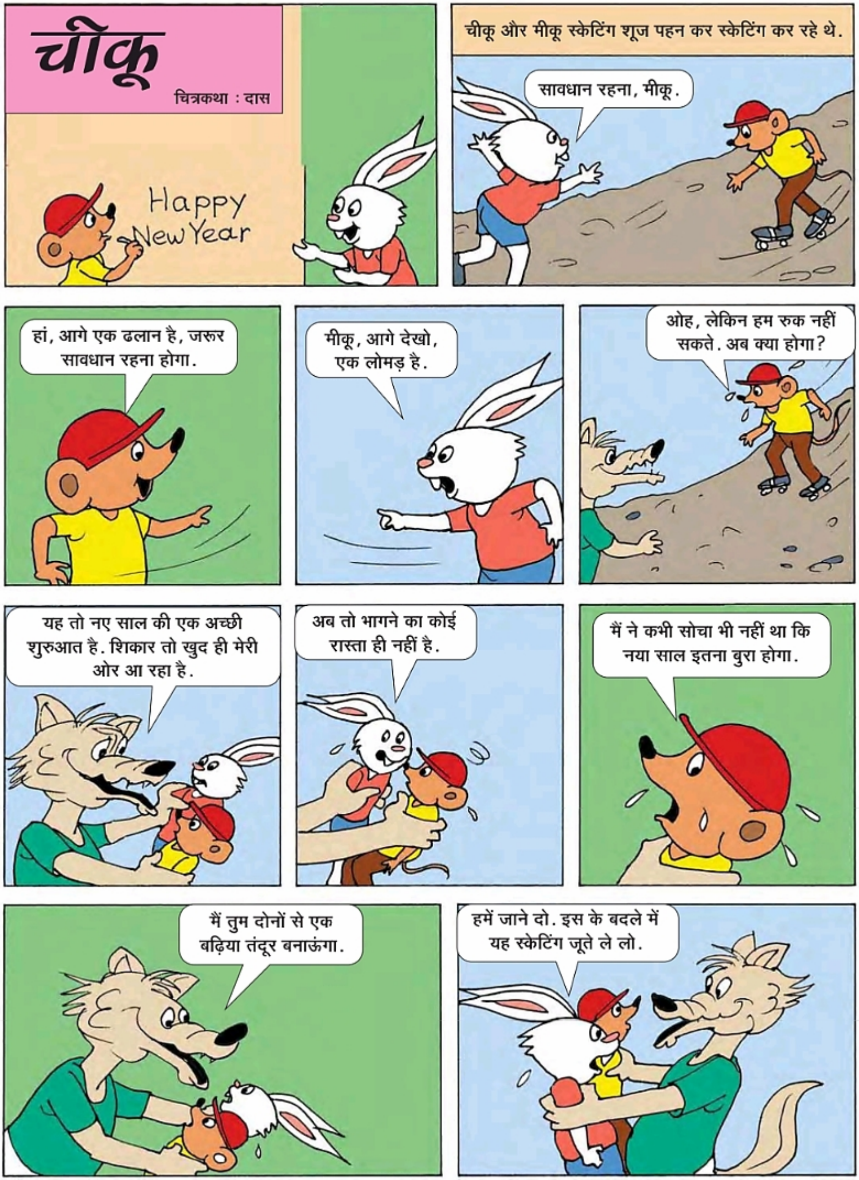
Happy New Year
चीकू और मीकू स्केटिंग शूज पहन कर स्केटिंग कर रहे थे.
सावधान रहना, मीकू.
हां, आगे एक ढलान है, जरूर सावधान रहना होगा.
मीकू, आगे देखो, एक लोमड़ है.
ओह, लेकिन हम रुक नहीं सकते. अब क्या होगा?
यह तो नए साल की एक अच्छी शुरुआत है. शिकार तो खुद ही मेरी ओर आ रहा है.
अब तो भागने का कोई रास्ता ही नहीं है.
मैं ने कभी सोचा भी नहीं था कि नया साल इतना बुरा होगा.
मैं तुम दोनों से एक बढ़िया तंदूर बनाऊंगा.
हमें जाने दो. इस के बदले में यह स्केटिंग जूते ले लो.

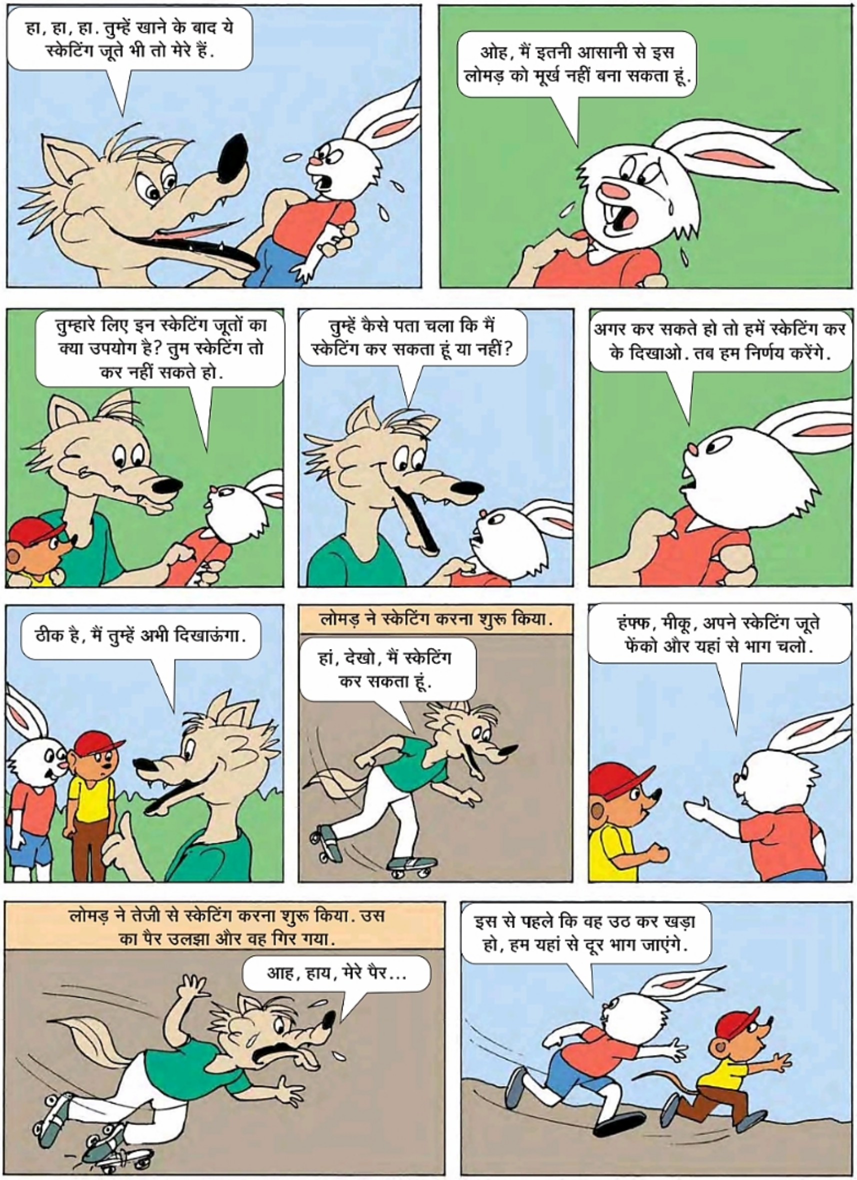
हा, हा, हा. तुम्हें खाने के बाद ये स्केटिंग जूते भी तो मेरे हैं.
ओह, मैं इतनी आसानी से इस लोमड़ को मूर्ख नहीं बना सकता हूं.
तुम्हारे लिए इन स्केटिंग जूतों का क्या उपयोग है? तुम स्केटिंग तो कर नहीं सकते हो.
तुम्हें कैसे पता चला कि मैं स्केटिंग कर सकता हूं या नहीं?
अगर कर सकते हो तो हमें स्केटिंग कर के दिखाओ. तब हम निर्णय करेंगे.
ठीक है, मैं तुम्हें अभी दिखाऊंगा.
लोमड़ ने स्केटिंग करना शुरू किया.
हां, देखो, मैं स्केटिंग कर सकता हूं.
हंफ्फ, मीकू, अपने स्केटिंग जूते फेंको और यहां से भाग चलो.
लोमड़ ने तेजी से स्केटिंग करना शुरू किया. उस का पैर उलझा और वह गिर गया.
आह, हाय, मेरे पैर...
इस से पहले कि वह उठ कर खड़ा हो, हम यहां से दूर भाग जाएंगे.

बिंदु मिलाओ

अंकों के अनुसार बिंदुओं को मिलाएं और चित्र को पूरा करें.

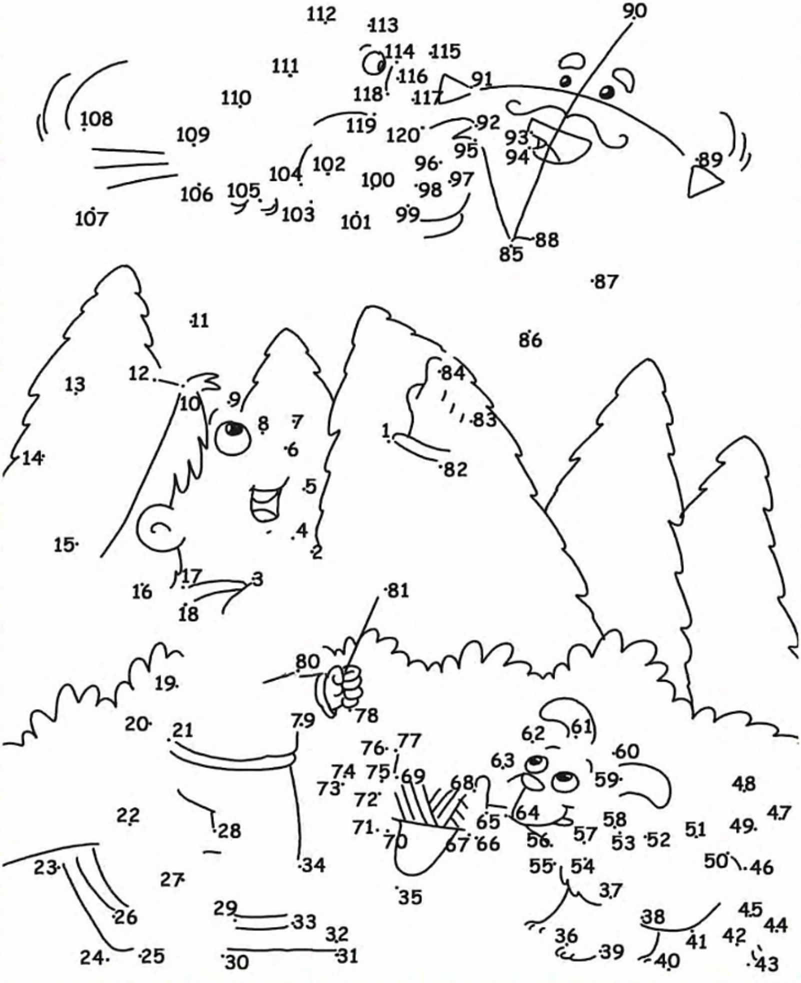
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46
47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96
97
98
99
100
101
102
103
104
105
106
107
108
109
110
111
112
113
114
115
116
117
118
119
120

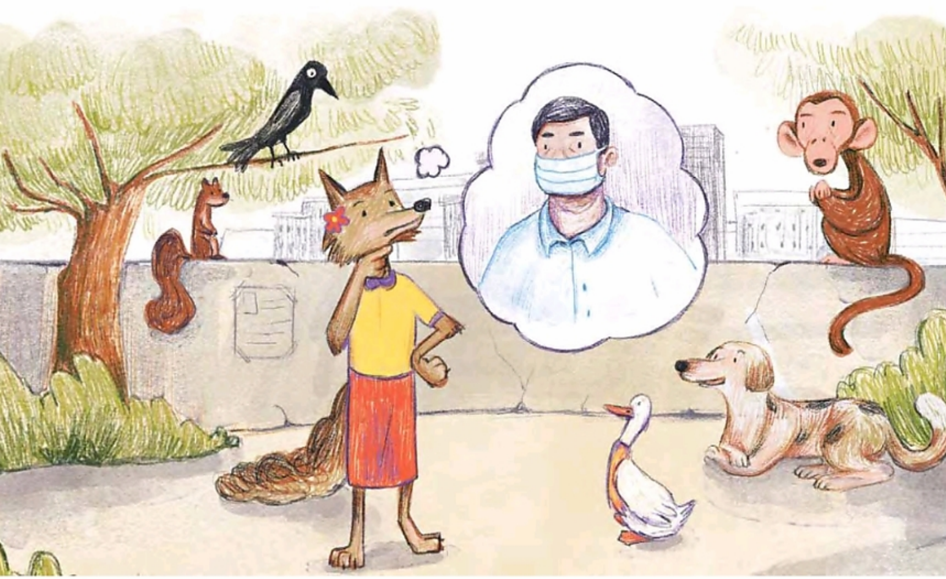

डोरी वाला रूमाल

कहानी ● वंदना गुप्ता

जेनी सियार जब से जंगल में आया था, तब से वह बहुत खुश था. जंगल में सांस लेने को ताजी हवा, खाने को हरी घास और पीने को झरने का मीठा व साफ पानी था, लेकिन कई बार ऐसा भी हुआ जब उसे अपने शहर के दोस्तों की बहुत याद आई.

शहर के बाहर कर्ण का ढाबा था. वह बचा हुआ खाना ढाबे से कुछ दूर डाल कर चला जाता था. जेनी अपने दोस्तों, टौमी कुत्ता, डोडो बतख, सैमी गिलहरी आदि के साथ वहां जाता और स्वादिष्ठ भोजन खाता था. वे आपस में मस्ती करते थे. अकसर पास के पेड़ से कीकू कौआ व मोंटी बंदर भी उन के साथ शामिल जाते थे.

एक दिन जेनी ने सोचा, 'क्यों न मैं शहर जा कर सब से मिल आऊं?'

वह तुरंत शहर की ओर चल दिया. शहर पहुंच कर उसे सब से पहले टौमी मिला.

''जेनी, तुम इतने दिन बाद? तुम तो ऐसे गए कि हमें याद ही नहीं किया,'' टौमी उसे देख कर बोला.

''मुझे तुम सब की याद आई तभी तो मिलने आया हूं. मैं नहीं आ पाया तो तुम्ही मुझ से मिलने आ जाते,'' जेनी ने भी टौमी से शिकायत की.

''यदि मुझे तुम्हारा पताठिकाना मालूम होता तो मैं जरूर आता, खैर, यह सब छोड़ो और यह बताओ कि तुम बाकी दोस्तों से मिले?'' टौमी ने पूछा.

''नहीं, मैं तो अभी आया हूं. क्या अब भी सब उसी जगह मिलते हैं?''

''हां, क्यों नहीं? बस, समय भी हो ही रहा है तुम भी चलो, सब से एकसाथ मिलना भी हो जाएगा और पुरानी यादें भी ताजा हो जाएंगी,'' टौमी बोला.

दोनों दोस्त बातें करते हुए ढाबे की ओर चल दिए. सभी दोस्त जेनी को देख कर बहुत खुश हुए और उस के हालचाल पूछने लगे.

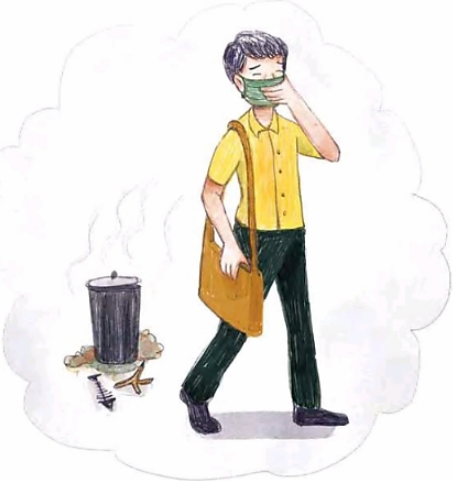

मैं तो ठीक हूं, पर आजकल शहर के लोगों को क्या हो गया है, सब अपनी नाक व मुंह पर रूमाल बांध कर क्यों घूम रहे हैं?''

कीकू अपनी चोंच के चावल निगलते हुए बोला, ''अरे भई, नाक पर रूमाल तो तभी बांधा जाता है जब बदबू आती है, सीधी सी बात है इन्हें बदबू आ रही होगी.''

''मुझे ऐसा नहीं लगता. सारी दुनिया जानती है कि हम कुत्तों की सूंघने की शक्ति सब से अधिक होती है. मुझे तो कोई बदबू नहीं आ रही,'' टौमी ने कहा.

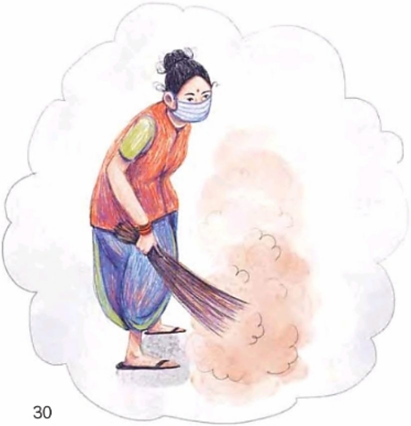

''ऐसा तो नहीं कि ये लोग सफाई करने जा रहे हों. अकसर सफाई करते समय लोग अपने मुंह पर कपड़ा बांध लेते हैं,'' डोडो ने मजाक में कहा.

''लेकिन क्या सभी लोग एकसाथ सफाई करने जाएंगे? मुझे तो किसी के हाथ में झाड़ू नजर नहीं आ रही है,'' कीकू ने कहा.

''मुझे तो लगता है कि उन्हें जुकाम हो गया है, जेब से रूमाल निकाल कर उन्होंने नाक और कानों के दोनों ओर डोरी लगा कर उसे कान में पहन लिया है,'' टौमी बोला.

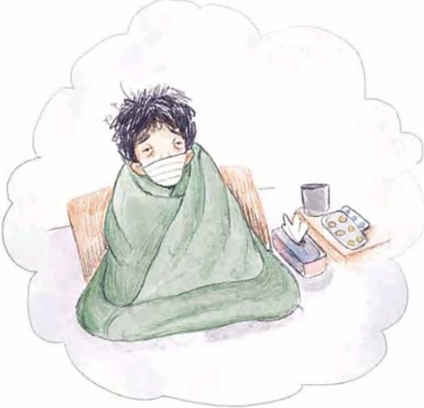

''तुम्हारा मतलब हैंड्स फ्री रूमाल है?'' सैमी ने पूछा.

''हां, नाक भी साफ होती रहेगी और कुछ और काम करने को हाथ भी खाली रहेंगे.''

''लेकिन सभी को कैसे एकसाथ जुकाम हो सकता है सभी को एक ही आइडिया कैसे सूझा, जिसे देखो, डोरी वाला रूमाल पहन कर घूम रहा है. वैसे भी

अधिकतर लोगों के रूमाल तो नाक से नीचे रहते हैं, इन की नाक बह रही होती तो ये ऐसा नहीं करते. मुझे तो कुछ और ही लगता है,” मोंटी ने केले का एक टुकड़ा लेते हुए कहा.

कीकू चिल्लाया, “मेरी समझ में आ गया, जैसे खाना बनाते समय लोग अपने सिर के बालों को ढकते हैं न जिस से कुछ गंदगी खाने में न गिर जाए, उसी तरह से लोग अपनी दाढ़ी ढकते हैं, ताकि कुछ गंदगी खाने में न गिर जाए इसीलिए इन लोगों ने अपनी दाढ़ी ढकने के लिए रूमाल बांधा हैं.”

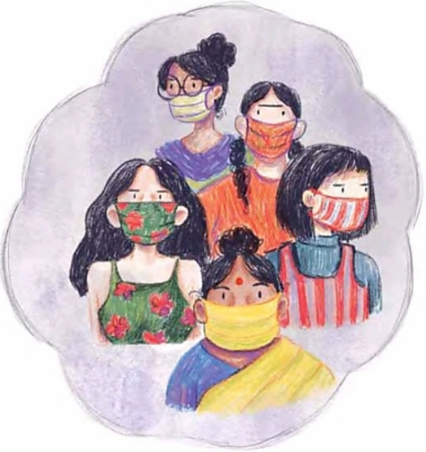

“सड़क पर चलते हुए लोग खाना कहां बनाएंगे और ये रूमाल तो लेडीज व बच्चों ने भी बांध रखे हैं, क्या उन की भी दाढ़ी है?” डोडो ने कहा.

मोंटी बोला, “तभी तो मैं कहता हूं कि जब भी कोई बुद्धिमान व्यक्ति बोलता है, तो बीच में अपनी चोंच नहीं खोलनी चाहिए. तुम्हें उस की बात ध्यान से सुननी चाहिए.”

“एक बार मैं भोजन की तलाश में एक घर में गया था. वहां खिड़की से मैं ने टीवी देखा. उस में अस्पताल का सीन चल रहा था. वहां डाक्टर व नर्स ने ऐसे ही रूमाल पहन रखे थे और वे किसी का औपरेशन कर रहे थे. मुझे लगता है ये सब नर्स व डाक्टर हैं जो किसी का औपरेशन करने जा रहे हैं.”

“मुझे तो तुम अकलमंद कम मूर्ख अधिक नजर आ रहे हो. न सड़क पर कोई अस्पताल है न मरीज. इस के अलावा रिकशे वाले, सामान बेचने वाले, सभी ने रूमाल पहने हैं तो क्या सभी डाक्टर व नर्स बन गए? बच्चे डाक्टर कैसे हो सकते हैं?” डोडो ने कहा.

“सैमी की बात में दम है. वह ठीक कह रही है,” कीकू को मोंटी की बात काटने का मौका मिल गया.

“तो फिर सैमी ही बता दे कि रूमाल क्यों पहने गए हैं?” वह थोड़ा नाराज हो कर बोला.

“दोस्तो, आप ने एक बात पर गौर किया कि सब के रूमाल अलगअलग नाप अलगअलग रंग, डिजाइन व आकार के हैं. मैं ने देखा कि कोई महिला तो अपनी ड्रैस से मैचिंग रूमाल भी पहनती है. मुझे तो लगता है कि ये कोई नया फैशन चला है,” यह आवाज डोडो की थी.

“हो सकता है, इंसान को रोज नए फैशन करने का शौक हो,” टौमी ने भी सहमति जताई.

“अरे, ऐसा कुछ नहीं है, असली बात तुम्हें मैं बताती हूं. मेरा तो अकसर अलगअलग घरों में आनाजाना लगा रहता है और वहां मैं ने टीवी पर भी देखा है कि लोग यह कपड़ा ओढते हैं जो गलत काम करते हैं और उन्हें अपना चेहरा छिपाना होता है,” सैमी ने बताया.

“क्या मतलब, मैं कुछ समझा नहीं,” जेनी ने पूछा.

“एक बार मैं ने टैलीविजन पर देखा कि कुछ लुटेरे अपने चेहरों को रूमाल से ढक कर बैंक लूट कर लाए थे,” सैमी बोली.

“सैमी की बात ठीक है. मैं ने भी एक आदमी को

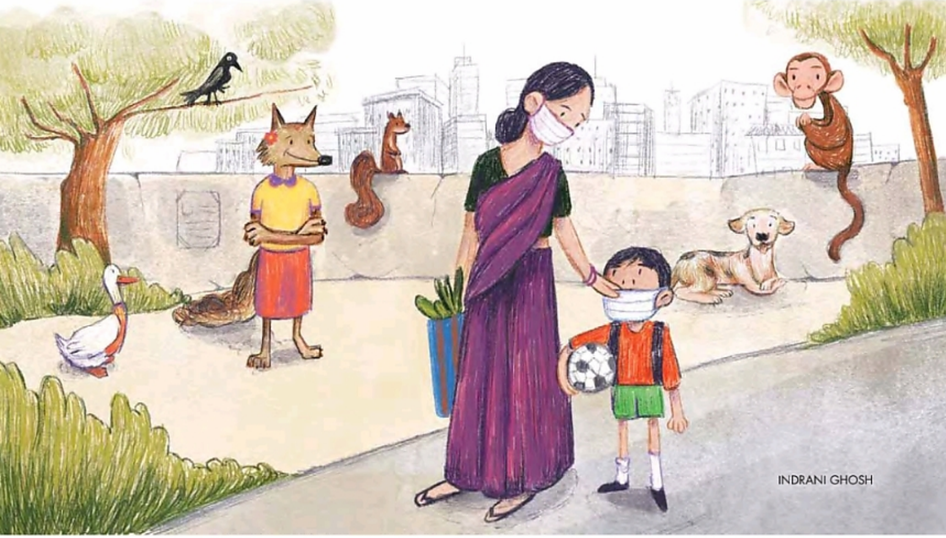
INDRANI GHOSH

यह कहते सुना था कि नाक व मुंह ठीक से ढक लो. आगे पुलिस वाले जांच कर रहे हैं,'' कीकू ने बताया.

''इस का मतलब ये सारे लोग चोर और लुटेरे हैं? फिर तो हमें पुलिस से इन की शिकायत करनी चाहिए, जिस से अपराध कम हो सकें,'' जेनी ने कहा. वह तनाव महसूस कर रहा था.

इस पर टौमी हंसता हुआ बोला, ''आप शिकायत किस से करोगे? मैं ने तो पुलिस वालों को भी डोरी वाले रूमाल बांधे देखा है.''

''आप का मतलब है कि वे भी चोरों के साथ मिले हुए हैं? यह तो बड़ी चिंता का विषय है. जब पुलिस वाले खुद ही लुटेरे बन जाएंगे तो आम लोगों की रक्षा कौन करेगा,'' जेनी बोला.

वे सब आपस में ये बातें कर ही रहे थे कि तभी पास में एक महिला अपने बच्चे को डांट रही थी, ''बंटी, ठीक से नाक व मुंह कवर करो जर्म्स अंदर चले गए तो बीमार पड़ जाओगे.''

यह सुन कर सभी दोस्त एकदूसरे की देखने शक्ल लगे.

''हम बेकार में ही अटकलें लगा रहे थे, अब आई बात समझ में. पर्यावरण में फैले प्रदूषण के कारण इन लोगों ने अपने नाक व मुंह ढक लिए हैं, जिस से बीमारी के कीटाणु अंदर शरीर में न चले जाएं,'' टौमी बोला.

''पहले तो इंसानों ने गंदगी फैलाई, पेड़ काटे और जब प्रदूषण बढ़ गया तो खुद का ही सांस लेना मुश्किल हो गया. अब खुद ही वे मुंह ढके घूम रहे हैं अच्छा हुआ मैं जंगल में रहने चला गया,'' जेनी बोला.

''ठीक कह रहे हो आप. मनुष्य को अपने ही कर्मों की सजा मिल रही है,'' डोडो ने भी जेनी की बात का समर्थन किया.

''दिन छिपने वाला है अब मेरा वापस लौटने का समय हो गया है,'' जेनी ने कहा.

''फिर आना, तुम से मिल कर बहुत अच्छा लगा,'' सभी बोले और इस तरह कोरोना वायरस महामारी से बेखबर जेनी सब से विदा ले कर जंगल की ओर लौट आया. ●

पता करें

पता कीजिए कि सर्दी की कौन सी सामग्री किस से संबंधित है.

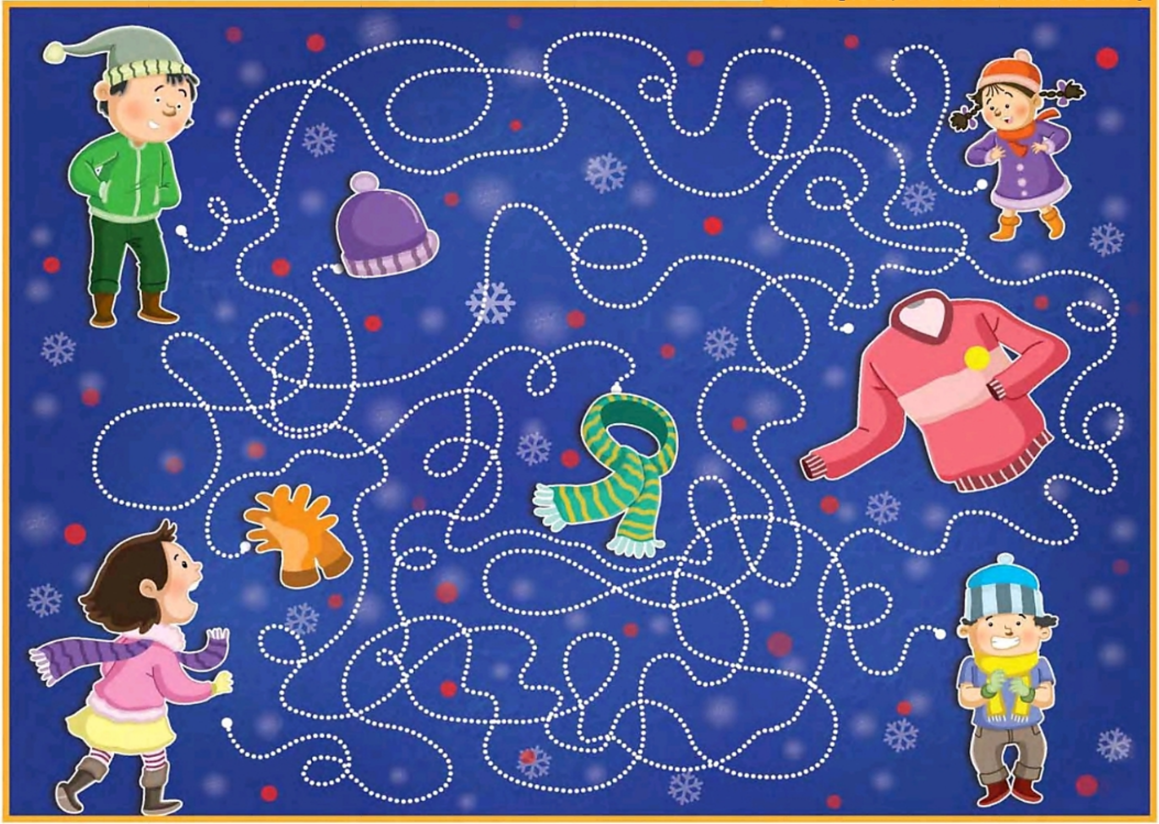

उत्तर: अंतिम पृष्ठ पर देखें.

रोड सैफ्टी वीक यानी सड़क सुरक्षा सप्ताह 11 से 17 जनवरी तक मनाया जाता है.

चित्र पूरा करें

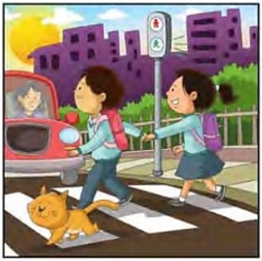

इस चित्र में कुछ हिस्से खाली रह गए हैं. चित्र को देखें, उन्हें पूरा करें और फिर इन में रंग भरें.

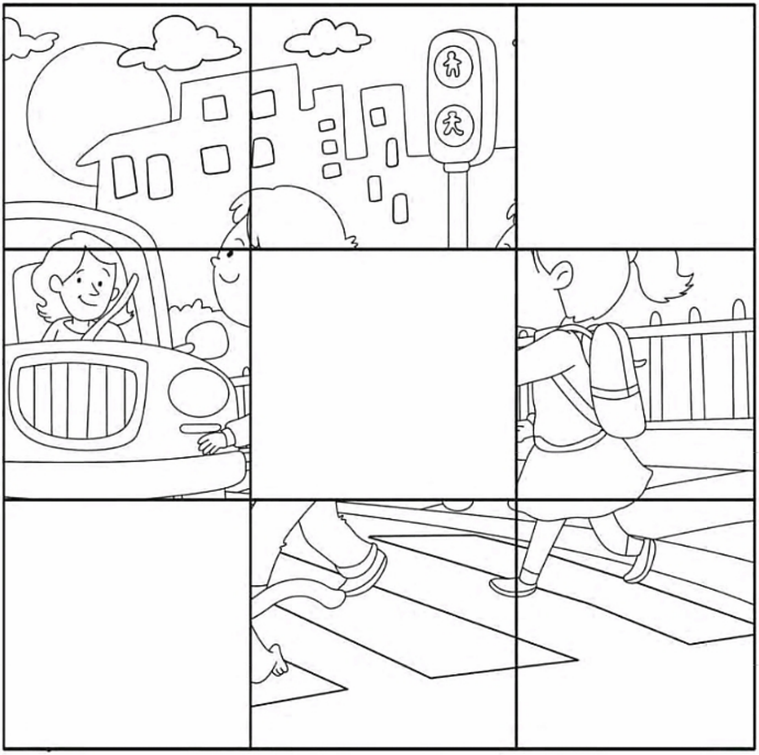

आप के सवाल मेनका आंटी के जवाब

मेनका आंटी पशुपक्षियों से बहुत प्यार करती हैं. अब आप के सवालों का जवाब मेनका आंटी देंगी. जैसे पशुपक्षियों को खाना कैसे खिलाएं, उन से कैसे प्यार करें, कैसे उन की देखभाल करें आदि. वे एक सांसद तो हैं ही, कुशल पर्यावरणविद् भी हैं.

जानवर हमारी धरती के निवासी हैं, जितना कि हम हैं. हम उन का शिकार न कर या उन के अंगों का इस्तेमाल न कर उन का सम्मान करते हैं, तो हम अपने ग्रह और प्रकृति के प्रति सम्मान दर्शाते हैं. जिन पशुओं तथा जानवरों को हम पालतू जानवर के रूप में रखते हैं, वे पूरी तरह से हम पर निर्भर रहते हैं और उन्हें वैसे ही प्यार और सम्मान देना चाहिए जैसे हम अपने भाईबहनों को देते हैं. पक्षियों और मछलियों को पालतू जानवर के रूप में न रखें, उन्हें पिंजरे में कैद करना और दयनीय बनाना अच्छा नहीं है.

मेनका संजय गांधी

मेरे पड़ोसी के पास दो खरगोश हैं. मैं अकसर उन के साथ खेलता हूं, जब मैं उन को पकड़ लेता हूं, तो उन के दिल की धड़कनों को मैं अपने दिल की धड़कन से ज्यादा तेज धड़कते हुए सुन सकता हूं. ऐसा क्यों है?

सूरज मेहता, 11 वर्ष, मुंबई

एक खरगोश के दिल की धड़कन प्रति मिनट सामान्यतया 140 से 180 बीट्स यानी इतनी गति से धड़कती है और तनाव इस आघात गति को प्रति मिनट 300 तक बढ़ा सकता है, जोकि प्रति सैकंड 5 बीट्स ज्यादा है. उन्हें किसी के द्वारा पकड़ा जाना पसंद नहीं होता है. खरगोशों को मुक्त रूप से भटकने छोड़ दिया जाना चाहिए. उन्हें किसी चीज पर दस्तक देना अच्छा लगता है या पेपर को अपने दांतों से फाड़ना और खिलौनों को पटकना बहुत पसंद है. खरगोश के व्यवहार पर ध्यान दीजिए और देखिए कि किस तरह का खेल उसे पसंद है. खरगोश आसानी से डर जाते हैं, इसलिए किसी तरह की हरकत करने की कोशिश करना बंद कीजिए. कभी भी खरगोश पर मत चिल्लाइए, क्योंकि इस से उसे हार्टअटैक हो सकता है. इस बात को सुनिश्चित कीजिए की जब आप उस के पास से दूर हों तो उस का मनोरंजन होता रहे. इस तरीके से खरगोश को तनाव नहीं होगा और वह चबाचबा कर या उत्पाती हो कर, चीजों को कुतरता हुआ अपनेआप में मस्त रहा करेगा.

मेरे घर के चारों ओर बहुत सारे गली के कुत्ते घूमते हैं. कहीं जाने के लिए उन के पास कोई ठिकाना नहीं होता है, खास कर जाड़े के दिनों में वे कहां जाएं? उन्हें क्या अपने घर में रखना सुरक्षित हो सकता है?

भूमि, 10 वर्ष, बीकानेर

यह तो बहुत ही खुशी और आश्चर्य की बात होगी अगर तुम उन्हें अपने घर में सुरक्षित और गरम रख सकोगे. लेकिन अगर ऐसा करना संभव न हो सके तो बड़ेबड़े कार्डबोर्ड वाले बक्से ले आओ और अपने घर की दीवार के बाहर उन्हें रख दो ताकि कुत्ते उन पर बैठ सकें. ये बक्से उन्हें गरम रखा करेंगे. तुम बक्से में रद्दी समाचारपत्रों को रख सकते हो जिन पर वे बैठ सकें. मैं तुम्हें सलाह दूंगी कि तुम उन्हें रात में अच्छी तरह खाना खिलाओ ताकि उन्हें ठंड कम महसूस हो. अगर तुम्हारे पास कोई अच्छा पशुचिकित्सक हो तो तुम्हें चाहिए कि उन्हें एकएक कर के स्टेरीलाइज्ड यानी बंध्यकृत कराओ ताकि किसी पिल्ले का जन्म न हो जो रोग से पीड़ित हो.

यदि आप पालतू जानवरों, पशुपक्षियों के बारे में कुछ भी पूछना चाहें, तो अपने प्रश्न हमें भेजें, मेनका आंटी हर प्रश्न का जवाब देंगी.

✉ **writetochampak@delhipress.in**

8657402248

कांचवाटिका

स्मार्ट

आइए, टिशू पेपर और एक पारदर्शी जार का इस्तेमाल करते हुए एक टेरेरीअम यानी कांचवाटिका बनाते हैं.

आप को चाहिए : ढक्कन के साथ एक पारदर्शी जार, रंगीन टिशू पेपर, छोटी टहनियां, कैंची, ग्लू.

ऐसे बनाएं :

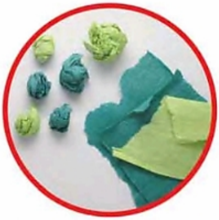

1. टिशू पेपर के छोटेछोटे टुकड़े कर लें और उन्हें कुचल कर क्रंपल्ड यानी मुड़ेतुड़े बौल जैसा बना दें.

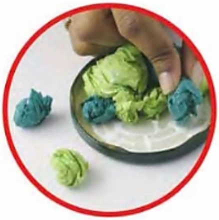

2. जार के ढक्कन के साथ उन सभी छोटेछोटे टिशू पेपर बौल्स को गोंद लगा कर चिपका दें. जैसा कि चित्र में दिखाया गया है.

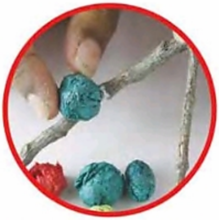

3. रंगीन टिशू पेपर के छोटेछोटे टुकड़े फाड़ लें और उन्हें टहनियों की शाखाओं से जोड़ दें.

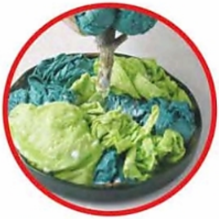

4. ढक्कन के साथ टहनी के तल को गोंद लगा कर चिपका दें.

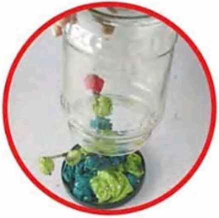

5. जार को बड़ी सावधानी से छोटे पेड़ के ऊपर रख दें और ढक्कन को कस कर बंद कर दें.

अब आप का टेरेरीअम यानी कांचवाटिका बन कर तैयार है.

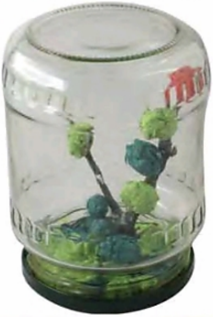

अपने घर पर इसे स्वयं ही बनाने की कोशिश करें. हमें अपनी प्रविष्टि writetochampak@delhipress.in या एक फोटो खींच कर +91 8657402248 पर भेज दें.

कहां है कोयल

कहानी ● डा. अभिताभ शंकर राय चौधरी

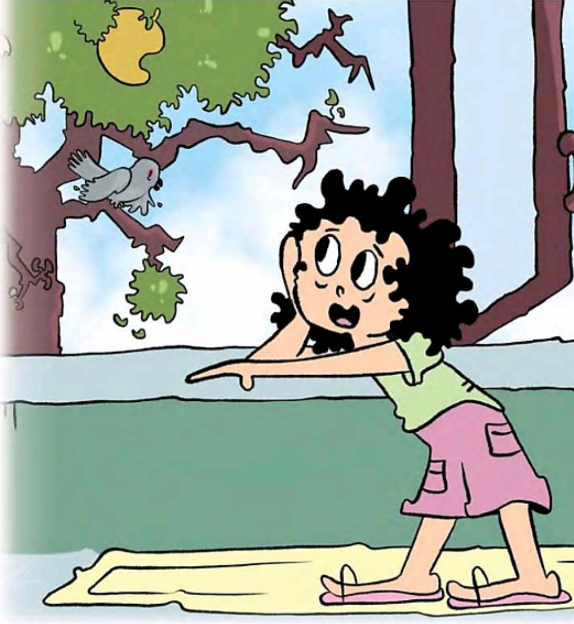

रेनी के हाथ में एक किताब थी, लेकिन वह उसे पढ़ नहीं रही थी. वह खिड़की के फलक से देख रही थी. कल तक फलक यानी खिड़की का शीशा मोटी धूल से ढका था, जिस से बाहर कुछ भी नहीं देखा जा सकता था. सुबह उस के पापा राजी ने धूल साफ कर दी थी.

शीशा बिलकुल साफ हो गया था. रेनी ने आम के पेड़ों के ऊपर मुसकराते हुए सूरज को देखा. आम के पेड़ों की पत्तियां हवा में लहरा रही थीं. सूरज की किरणें उन के साथ लुकाछिपी का खेल खेल रही थीं.

''कूहू...कूहू...'' अचानक एक पक्षी पेड़ की एक डाल से दूसरे पर कूदा.

रेनी दौड़ कर अपने पापा के पास गई और बोली, ''पापा, वह कौन सा पक्षी है?''

''ओह, वह तो कोयल है,'' पापा ने खिड़की के फलक से उसे देखा और कहा.

''वह ऐसी आवाज क्यों निकाल रही है?''

पापा मुसकराए और बोले, ''नहीं, नहीं, वह आवाज नहीं निकाल रहा है, वह गा रही है और अपने दोस्तों को बुला रही है.''

''सचमुच? क्या उस के दोस्त भी हैं?''

''क्यों नहीं? हरेक का एक दोस्त होता है.''

''उस के दोस्त कहां हैं, पापा?''

''संभवतः पत्तों में छिपे हुए हैं,'' पापा मुसकराए.

रेनी कोयल को ढूंढ़ना चाहती थी इसलिए वह बगीचे में गई और बोली, ''कोयल, मेरे पास आ जाओ. तुम कहां हो, चिड़िया? मैं तुम्हें देखना चाहती हूं.''

तभी अचानक 'छपाक' से उस के सिर पर कोई चीज गिरी. रेनी भौंचक्का थी. ''ओह, वह क्या है? तुम कौन हो?'' एक लंबी हरी चीज उस के सिर पर बैठी. उस ने उस से पूछा.

''मैं एक कैटर पिलर यानी इल्ली हूं,'' उस ने कहा.

''तुम तो एकदम हरे हो,'' रेनी ने कहा.

''ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं हरी पत्तियां खाता हूं.''

''लेकिन मैं तो हरा नहीं हूं, जबकि मैं हरी घास ही

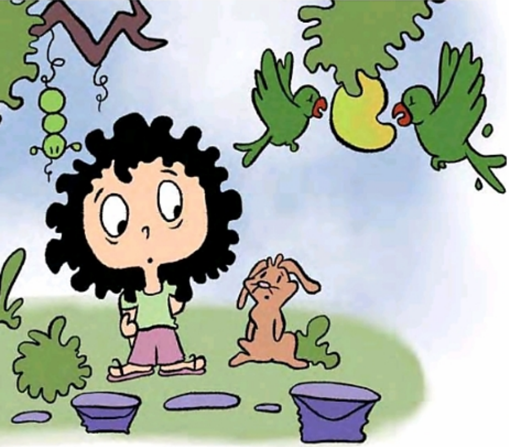

खाता हूं,'' तभी कहीं दूर से कूद कर रोरो खरगोश वहां आया और बोला, ''मैं अभी भी भूरा हूं.''

''हा, हा, हा,'' रेनी की जोरदार हंसी फूट पड़ी, ''तुम्हारी नाक के पास लंबेलंबे बाल क्यों हैं?''

''नासमझ लड़की, हंसना बंद करो. ये तो मेरी मूंछें हैं.''

''मूंछें? तुम्हारे पास मूंछें,'' रेनी की हंसी उस के नियंत्रण से बाहर हो गई थी.

''क्या तुम्हारे पापा की मूंछें नहीं हैं?''

''हां, जरूर, उन की मूंछे हैं.''

''तो फिर? यह तो एक फैशन स्टेटमैंट है,'' रोरो ने गर्व से कहा.

''आउच, इस ने तो घायल कर दिया,'' अपने सिर को रगड़ते हुए रेनी बोली.

''क्या हुआ?'' रोरो ने पूछा.

''कोई चीज मेरे सिर पर गिरी थी,'' उस ने नीचे घास पर देखा. ''ओह, यह तो अधपका आम है.''

''जब तुम पेड़ों के बीच से गुजरो तो सावधान रहा करो,'' रोरो ने कहा, ''वे तोते जो पेड़ पर बैठे हैं, उन्हें गिरा देते हैं.''

रेनी ने ऊपर देखा. पेड़ की डालियों पर 5 हरे तोते बैठे थे, जो अधपके आमों पर चोंच मार रहे थे.

''रेनी, तुम वहां क्या कर रही हो? जल्दी से आओ, ब्रेकफास्ट तैयार है,'' मम्मी ने उसे अंदर आने के लिए पुकारा.

रेनी घर के अंदर चली गई. ब्रेकफास्ट परोसा गया. वे इडली और सांभर खा रहे थे.

ब्रेकफास्ट के दौरान रेनी ने सुबह की अपनी ऐडवैंचर की बातों को अपने पापा के साथ साझा किया.

उस ने पूछा, ''पापा, क्या हम अपने घर में इन चिड़ियों में से किसी एक को नहीं रख सकते?''

''तुम उन्हें पालतू पक्षी के रूप में रखना चाहती हो? क्या उन्हें एक पिंजरे में रखना अच्छा है? उन्हें भी खुले में उड़ने छोड़ दो.''

रेनी खामोश रह गई.

पापा ने उस की खामोशी को देखा तो वे बोले, ''ठीक है, मैं उन के लिए एक खुला पिंजरा बनाऊंगा. तुम उन्हें खिड़की से देख सकती हो, जब वे अपना दाना चुगने के लिए आएंगी, ओके?''

रेनी खुश थी. पापा ने एक पिंजरा बना दिया था. जिस में एक चबूतरा था, लेकिन दीवारें नहीं थीं. इसे उन्होंने खिड़की के सामने टांग दिया और रेनी को कहा कि चिड़ियों के लिए उस में खाना रख दिया करे. कुछ दिन तक उन्होंने वहां तरबूज के टुकड़े रखे और बाकी दिन थोड़े से चावल रख दिए.

हर सुबह रेनी खिड़की के पास उम्मीद से बैठ जाती

थी, उसे एक तोते या कोयल के आने का इंतजार रहता. लेकिन कोई भी चिड़िया नहीं आई. इस की जगह एक काला पक्षी आया और टुकड़ों पर चोंच मारने लगा. इस की पूंछ के नीचे एक खूबसूरत सा लाल धब्बा था.

''पापा, वह कौन सी चिड़िया है?'' उस ने पूछा.

''यह एक नाइटिंगल यानी बुलबुल है.''

चिड़िया ने खुशी से सीटी बजाई, ''हां, मैं एक नाइटिंगल हूं. लोग मुझे बुलबुल कह कर भी बुलाते हैं.''

रेनी बहुत उत्साहित थी.

अगले दो दिन तक रेनी ने खिड़की के शीशे से बाहर देखना जारी रखा, लेकिन कोई भी पक्षी नहीं आया. आखिर में एक दिन तीन तोते आए और चिल्लाने लगे, ''पहले उसे खाना दो.''

''मैं खाऊंगा.''

''पिजरा नीचे गिर जाएगा,'' रेनी डर से बोली और तभी अचानक उस ने सुना, ''कूहू...कूहू,'' लेकिन वह इसे ढूंढ़ न सकी. उस ने कहा, ''आओ कोयल, आओ. पापा ने तुम्हारे लिए खाना रख दिया है.''

लेकिन उस ने बगीचे से आती एक अन्य आवाज को सुना, ''तुम हमें आने के लिए न्योता क्यों नहीं देती हो?''

तभी रेनी वहां रोरो को अपने दोस्तों के झुंड जिस में गिलहरी, कबूतर, कठफोड़वा, बिल्ली और एक कुत्ता था, के साथ खड़ा देख कर हैरान रह गई. वे सभी एकसाथ बोले, ''चलो, हम सभी एक पार्टी करते हैं.''

''जरूर,'' रेनी ने ताली बजाई. ''सभी ऊपर आ जाओ,'' उस ने कहा और इस तरह वहां पार्टी शुरू हो गई. सभी ने खूब मजे किए और खुशी से सराबोर हो गए. ●

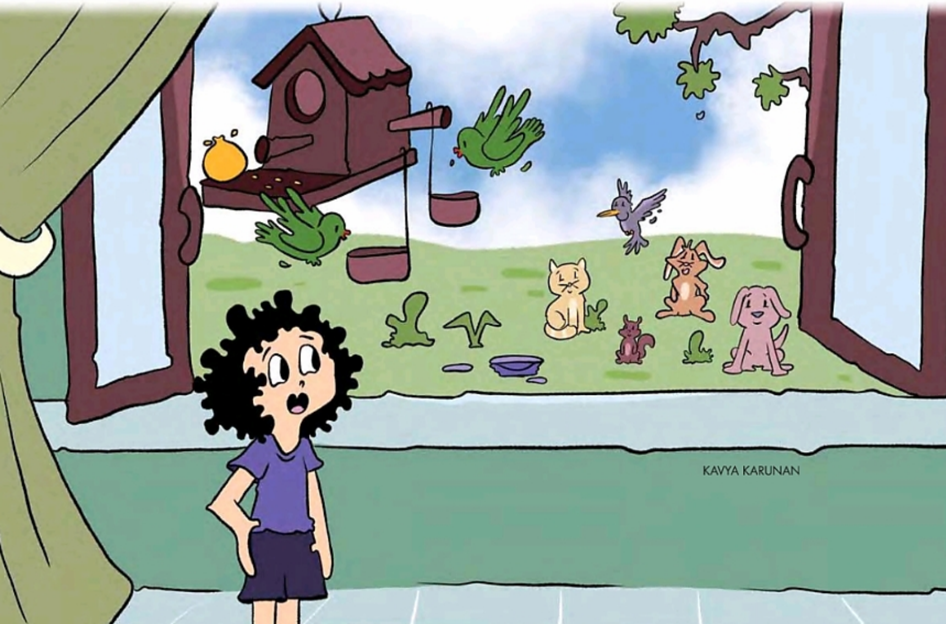

दादाजी और नया साल

कहानी ● विवेक चक्रवर्ती

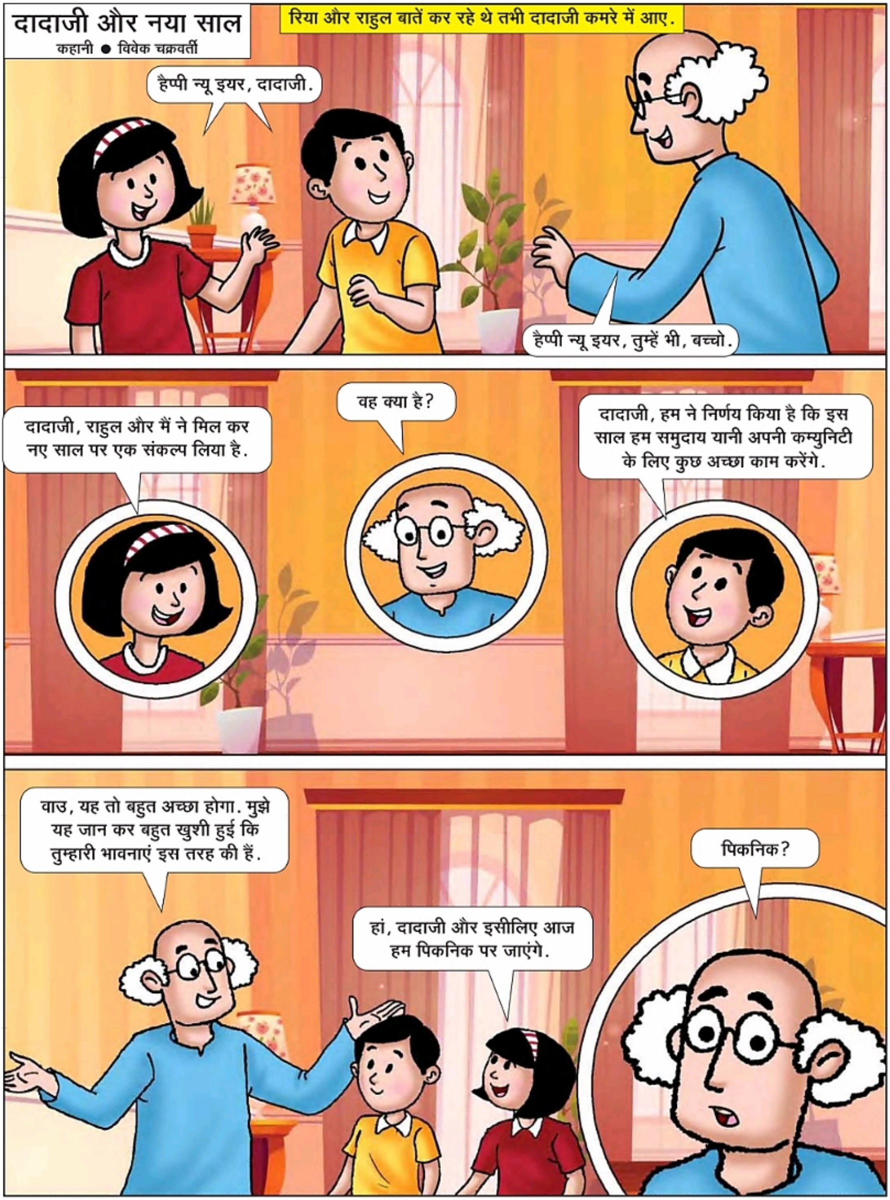
रिया और राहुल बातें कर रहे थे तभी दादाजी कमरे में आए.
हैप्पी न्यू इयर, दादाजी.
हैप्पी न्यू इयर, तुम्हें भी, बच्चो.
दादाजी, राहुल और मैं ने मिल कर नए साल पर एक संकल्प लिया है.
वह क्या है?
दादाजी, हम ने निर्णय किया है कि इस साल हम समुदाय यानी अपनी कम्युनिटी के लिए कुछ अच्छा काम करेंगे.
वाउ, यह तो बहुत अच्छा होगा. मुझे यह जान कर बहुत खुशी हुई कि तुम्हारी भावनाएं इस तरह की हैं.
हां, दादाजी और इसीलिए आज हम पिकनिक पर जाएंगे.
पिकनिक?

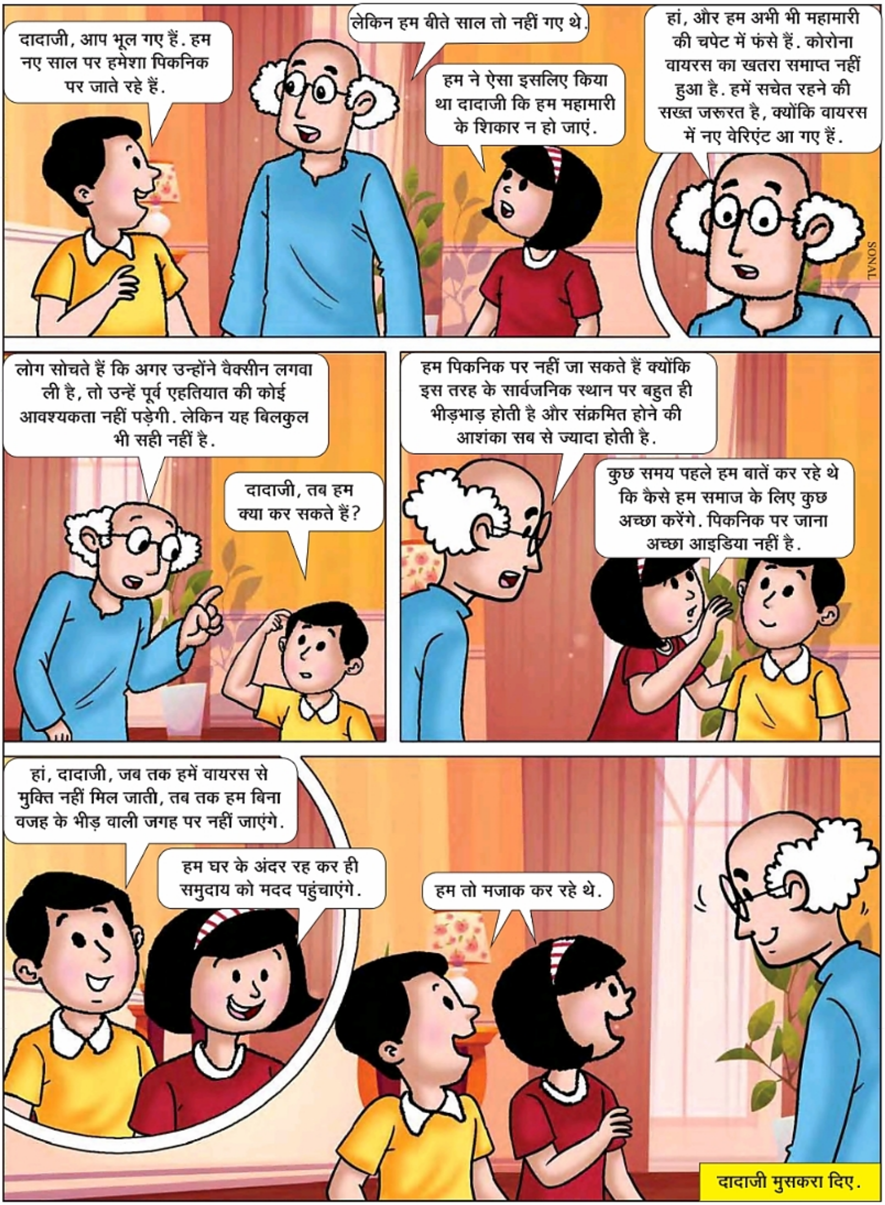
दादाजी, आप भूल गए हैं. हम नए साल पर हमेशा पिकनिक पर जाते रहे हैं.
लेकिन हम बीते साल तो नहीं गए थे.
हम ने ऐसा इसलिए किया था दादाजी कि हम महामारी के शिकार न हो जाएं.
हां, और हम अभी भी महामारी की चपेट में फंसे हैं. कोरोना वायरस का खतरा समाप्त नहीं हुआ है. हमें सचेत रहने की सख्त जरूरत है, क्योंकि वायरस में नए वेरिएंट आ गए हैं.
SONAL
लोग सोचते हैं कि अगर उन्होंने वैक्सीन लगवा ली है, तो उन्हें पूर्व एहतियात की कोई आवश्यकता नहीं पड़ेगी. लेकिन यह बिलकुल भी सही नहीं है.
दादाजी, तब हम क्या कर सकते हैं?
हम पिकनिक पर नहीं जा सकते हैं क्योंकि इस तरह के सार्वजनिक स्थान पर बहुत ही भीड़भाड़ होती है और संक्रमित होने की आशंका सब से ज्यादा होती है.
कुछ समय पहले हम बातें कर रहे थे कि कैसे हम समाज के लिए कुछ अच्छा करेंगे. पिकनिक पर जाना अच्छा आइडिया नहीं है.
हां, दादाजी, जब तक हमें वायरस से मुक्ति नहीं मिल जाती, तब तक हम बिना वजह के भीड़ वाली जगह पर नहीं जाएंगे.
हम घर के अंदर रह कर ही समुदाय को मदद पहुंचाएंगे.
हम तो मजाक कर रहे थे.
दादाजी मुसकरा दिए.

गलत को बताएं

इस चित्र में कुछ बातें ऐसी हैं जो सही नहीं हैं, उन्हें ढूंढ़ें.

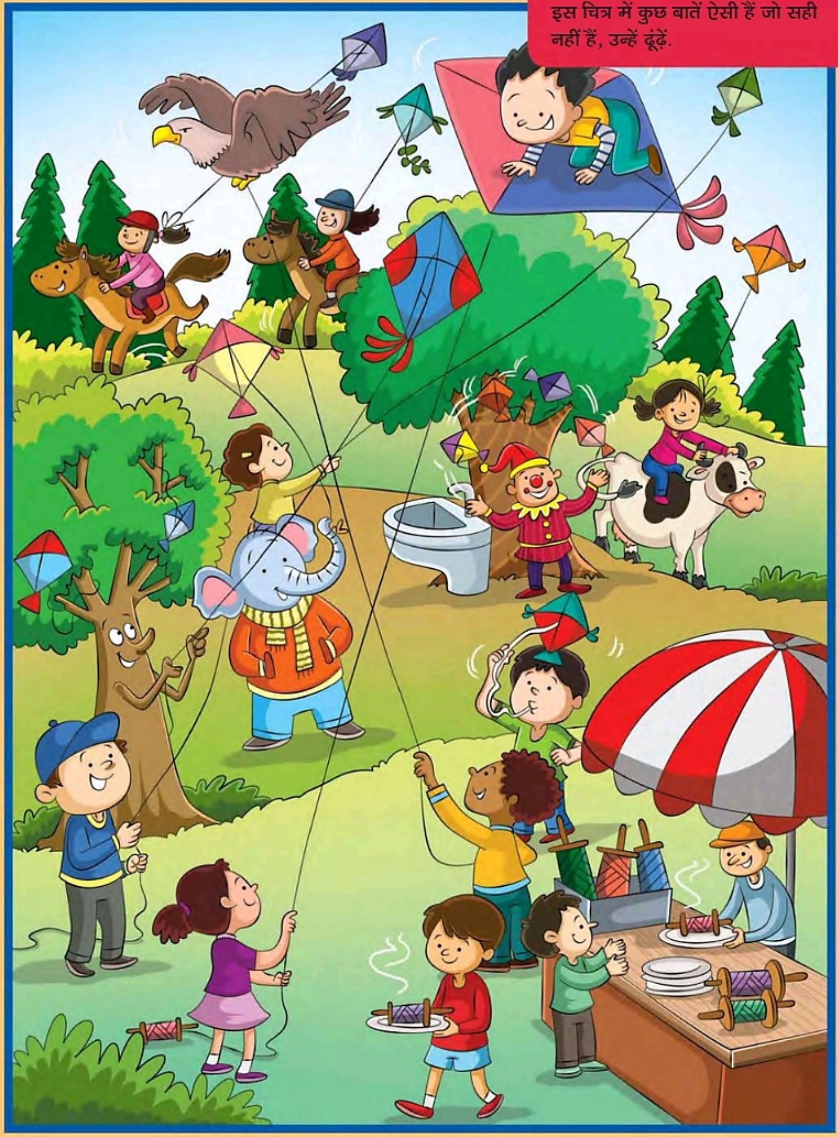

पत्रिकाएं पढ़ें ➡➡➡ आगे बढ़ें

पत्रिकाएं पढ़ें. छपे **सुंदर चित्र**, जानकारी बढ़ाने वाली **कहानियां** पढ़ने से ही याद रखने की आदत बनेगी. टीवी और मोबाइल की घूमती तसवीरें मन में टिकती नहीं हैं.

टीवी कार्टूनों में दोस्ती, प्यार, सचाई कहां है.

पत्रिकाएं जब मरजी हो, तब पढ़ें. छपे चित्रों को काट कर सजा लें, खुद ही इन में सुंदर रंग भर लें. चुटकले, पहेलियां सब के साथ शेयर करें. अपटूडेट रहें. टीवी सिर्फ देख सकते हैं.

बस में हों या रेल में, हर समय पत्रिकाएं ही आप के साथ हैं. **पत्रिकाएं सच्ची दोस्त.**

IS UN
With virtually every age g
segment and language covering
Indians, we are the most diverse maga
group in India. So next time you want to
address anyone in India, you are better off
speaking to the Delhi Press Group today.
DELHI PRESS
AUGUST (SECOND) 2018 ₹35
CHAMPAK

पत्रिकाएं पढ़ें, आगे बढ़ें.

नन्हीं कलम से

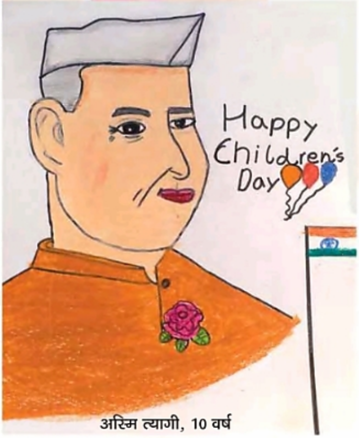

अस्मि त्यागी, 10 वर्ष
नोएडा

प्यारा घर

अहा, मेरे पापा का एक घर है, प्याराप्यारा घर और उन के घर में उन का एक बेटा है, जो आलसी और क्रेजी बौय है. अहा, मेरे पापा के प्यारेप्यारे घर में उन की एक बच्ची भी है, जो शरारती और प्यारी लड़की है. अरे हां, मेरे पापा के प्यारे से घर में उन की एक पत्नी भी हैं जो नम्र हैं, जो सीधीसादी, भोलीभाली हैं. वे एक सुशील गृहिणी हैं. अरे हां, मेरे पापा अपने प्यारे से घर में सभी के साथ और सभी उन के साथ बड़े प्यार से रहते हैं, क्योंकि यह हमारा प्यारा सा घर है.

देवदत्त आर नैयर, 8 वर्ष
केरल

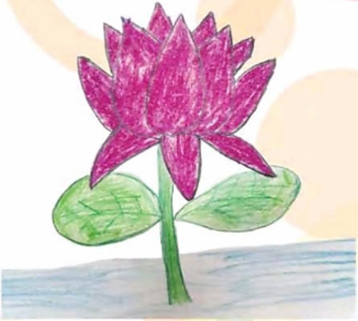

अनिक्षा सिंह, 8 वर्ष
नई दिल्ली

क्रिसमस का समय

क्रिसमस का समय आ गया है. हम सब एक हो जाएंगे, ठीक उसी तरह जैसे चमकता हुआ सूरज एक है, तेज है. यह समय मजे का है, क्योंकि यह समय क्रिसमस का है, हमारे लिए यह एक बहुत ही अच्छा समय है. जब हर कोई खुश है तो हम क्यों और किसलिए हंगामा करें. यह समय क्रिसमस का है, एक ठंडी और कड़कड़ाती रात है. हर जगह बर्फ ही बर्फ है, आसमान में तारे चमक रहे हैं. यह समय क्रिसमस का है, सैंटा अपनी स्लेजगाड़ी में आने को है. मैं तो गरीब बच्चों की मदद करूंगा क्योंकि यही तो मैरी क्रिसमस की प्रतिज्ञा है.

शरण्या सुमन, 8 वर्ष
गाजियाबाद

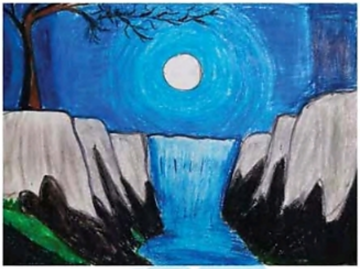

आरुष, 8 वर्ष, बैंगलुरु

अंदर फंसे रहना

जब से कोरोना वायरस आया है, मैं तो घर के अंदर ही फंस गई हूं. अब तो लौकडाउन लगा है. मैं बाहर जाना चाहती हूं, दौड़नाकूदना और चारों ओर उछलकूद करना चाहती हूं. नजरों में ज्यादा लोग तो आते नहीं हैं, फिर भी हमें उम्मीद है कि सबकुछ ठीक हो जाएगा. अभी के लिए तो यह एक बड़ी सतर्कता की स्थिति है, हमें बड़े समारोह नहीं करने चाहिए. भीड़भाड़ से बच कर रहें. कोरोना वायरस चारों ओर फैल सकता है, इसलिए हमें दूरदराज के स्थानों पर नहीं जाना चाहिए. हमें भीड़भाड़यों बाहर नहीं जाना चाहिए. हमें बड़े बैंड देखने के लिए नहीं जाना चाहिए. इन सब के बजाय अपने हाथों को धोएं और मास्क पहना करें. मुझे उम्मीद है कि कोरोना वायरस दूर भागेगा और इस के बाद एक सामान्य दिन बन जाएगा.

श्रेया अनूप, 9 वर्ष
केरल

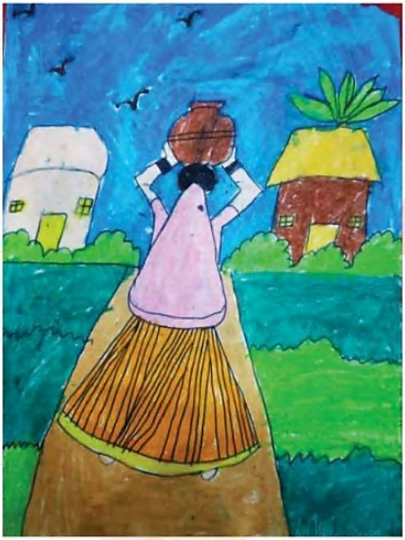

आद्या गुप्ता, 7 वर्ष
नई दिल्ली

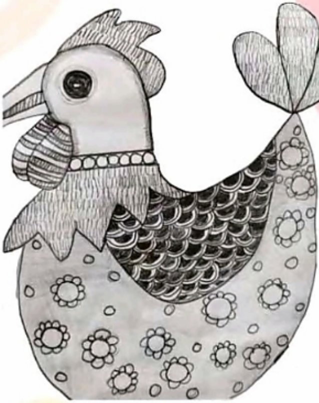

जाह्नवी गुंदूपल्ली, 10 वर्ष, हैदराबाद

सुप्रभात

उठो, उठो, उठो, अपनी आंखें खोलो. मेंढक टर्रटर्र कर रहे हैं, चिड़ियां चहचहाते हुए गा रही हैं, अलार्म बज रहा है. उठो, उठो, उठो, सुबह हो गई है. एक नए ऐडवैंचर के लिए तैयार हो जाओ जो तुम्हारे साथियों के साथ तुम्हारा इंतजार कर रहा है. सुस्ती को दूर भगाओ जो तुम्हारे अंदर समाई हुई है. ताजी हवा बह रही है और सूरज चमक रहा है. बाहर जाओ और देखो कि दुनिया जाग चुकी है और तुम भी जाग गए हो. आओ गुडमौर्निंग के साथ हम एक अच्छा दिन भी बिताएं. हमारा दिन शुभ और खुशनुमा रहे.

अनन्या यादव, 13 वर्ष, बिहार

यह एक पेपर टर्टल यानी कछुआ है. इसे हमारी 8 वर्षीय पाठिका वान्या जैन ने अहमदाबाद से बना कर भेजा है.

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:

चंपक, दिल्ली प्रैस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई- 400031
writetochampak@delhipress.in 8657402248
www.facebook.com/ChampakMagazine
http://www.youtube.com/ChampakSciQ

हम आप की सामग्री लौटा नहीं सकते इसलिए हमें भेजी सामग्री की कापी अपने पास रखें.

अंतर बताओ

यहां 10 गलतियां हैं. आप उन गलतियों को ढूंढ़ कर बताएं.

4 जनवरी को विश्व ब्रेल दिवस मनाया जाता है.

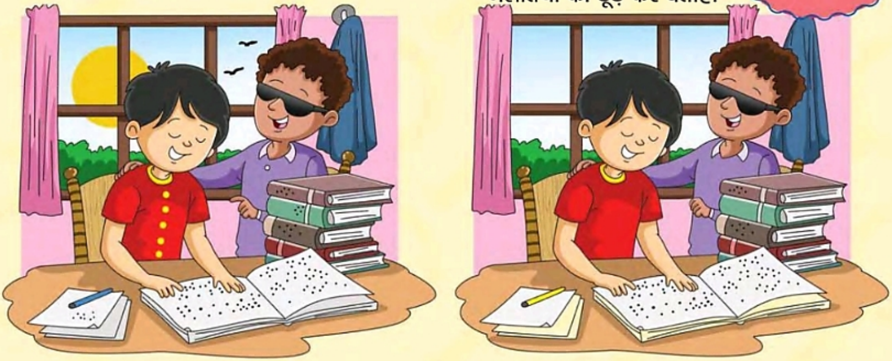

हमारी और उन की समानताएं

गाय हर जगह पाई जाती है और मुख्य रूप से ट्रैफिक को रोक कर सड़कों पर ज्यादातर खड़ी देखी जाती हैं. हालांकि हम इन जानवरों के बारे में सोचते हैं कि ये आलसी और मंद होती हैं, लेकिन गायें बहुत बुद्धिमान पशु हैं, जो हम से बहुत से मामलो में समान होती हैं जैसा कि हमें विश्वास है.

वे लजालु होती हैं, वे घुमक्कड़, गुस्सैल तथा सहनशील होती हैं. मनुष्यों की तरह ही गाय भी बाहरी तत्त्वों द्वारा बहुत ही ज्यादा प्रभावित होती है. गुस्सा या चिंतित हो सकती है, खास कर माहौल अगर अनजाना या अपरिचित परिस्थितियों वाली हो.

गायों का झुंड स्पष्ट रूप से हाइरार्की यानी तारतम्यता के साथ रहते हैं. वे लगभग 100 व्यक्तियों के बीच में भी एक झुंड में फर्क कर सकती हैं. एक बड़े समूह के अंदर भी दूसरों के साथ संबंध बनाने में समर्थ होती हैं क्योंकि उन के पास जटिल सामाजिक संपर्क होते हैं, मतलब की ग्रंथियां होती हैं जिस से वे घनिष्ठ संबंध बनाती हैं. मनुष्य की तरह ही वे भी अपना अधिकांश समय दोस्तों के एक छोटे से समूह के साथ बिताती हैं और अन्य जानवरों के प्रति द्वेष रखने के लिए भी जानी जाती हैं.

गायों के परिवार एकसाथ रहते हैं. आमधारणा के विपरीत ऐसा माना जाता है कि गायें खड़ेखड़े नहीं सोती हैं बल्कि माना जाता है कि वे स्वाभाविक रूप से अपने रिश्तेदारों के पास रहेंगी, जब तक कि परिवार की इकाई के भीतर पदानुक्रम यानी तारतम्यता के साथ सोने की व्यवस्था यानी बिस्तर लगा न दिए गए होंगे यानी बेड बिछा न दिए गए हों.

एक गाय एक मिनट में लगभग 50 बार चबाती है, इस तरह एक दिन में वह अपने जबड़े को लगभग 40 हजार बार हिलाती है.

पोपो की चाल

कहानी ● डां. के. रानी

पोपो तोता सत्यवन में रहता था. वह स्वभाव से बहुत सरल और दूसरों की मदद करने वाला था. सब उस से बहुत प्यार से बातें करते थे. एक दिन सुबह के सारे पक्षी नीम पेड़ पर बैठे थे.

पोपो ने कहा, ''बहुत दिन से मैं सत्यवन से बाहर घूमने नहीं गया हूं, मैं कुछ दिन के लिए यहां से दूर जाना चाहता हूं.''

''तुम ठीक कहते हो पोपो. लेकिन दूर जाना खतरनाक है. इसलिए मैं दूर जाने से डरता हूं,'' पीहू कबूतर ने कहा.

''अपने शौक को पूरा करने के लिए थोड़ाबहुत जोखिम तो उठाना ही पड़ता है. मौका मिलते ही मैं घूमने जरूर जाऊंगा,'' नोनी कठफोड़वा बोला.

''पता नहीं वह दिन कब आएगा?,'' पोपो ने कहा.

''चिंता क्यों करते हो? यदि तुम ने ठान लिया है तो तुम्हारी इच्छा बहुत जल्दी पूरी हो जाएगी,'' पीहू बोला.

काफी देर बातचीत करने के बाद वे सब अपनेअपने घर चले गए. अगले दिन सारे पक्षी अपने काम पर चले गए. सुबह से ही मौसम थोड़ा खराब था. अचानक ओलावृष्टि के साथ बहुत जोरों की बारिश होने लगी. सारे पक्षी अपने बचाव के लिए इधरउधर ठिकाना ढूंढ़ने लगे. काफी देर तक ओलावृष्टि होती रही.

एक बड़ा सा ओला पोपो के पंख पर गिरा और वह घायल हो गया. उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? घायलावस्था में भी वह किसी तरह एक पेड़ पर छिप कर बैठा रहा. यहां से उस का घर और नीम का पेड़ बहुत दूर था. ऐसी हालत में वह लौट कर नहीं जा सकता था. अन्य पक्षी शाम तक अपने ठिकानों पर लौट आए थे, लेकिन पोपो कई दिन तक अपने घोंसले पर लौट कर नहीं आया था.

पेनी बहुत चालाक थी. वह भोजन की तलाश में नीम के पेड़ के पास आई हुई थी. अपने बचाव के लिए वह सामने पीपल की पेड़ की डाल पर बैठ गई. ऐसे मौसम में उस की कहीं जाने की हिम्मत नहीं हो रही थी. पेनी का अपना कोई घोसला नहीं था. वह इसी तरह इधरउधर घूम कर अपने दिन काटती थी. उस की नजर लगातार रात को ठहरने लिए ठिकाना ढूंढ़ रही थी. सामने नीम के पेड़ पर उसे एक कोटर दिखाई दिया. जैसे ही रात हुई उस ने वहां झांक कर देखा, उस के अंदर कोई नहीं था. उस ने सोच लिया कि वह यहीं रात गुजारेगी और आराम से सो जाएगी.

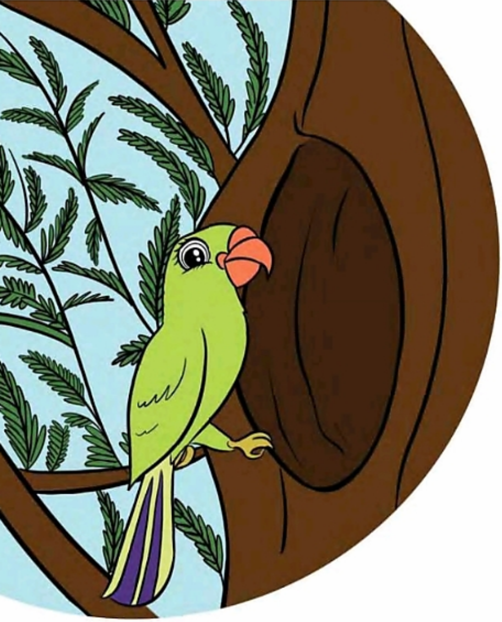

दूसरे दिन सुबह वह कोटर से बाहर नहीं निकली और बैठ कर आसपास के पक्षियों की बातें सुनने लगी.

पीहू कबूतर बोला, ''पता नहीं पोपो कहां रह गया? कल से वापस लौट कर नहीं आया.''

''कल मौसम बहुत खराब था, हो सकता है कहीं दूर चला गया हो और वहां से लौट कर न आ सका हो,'' पीकू बोली.

''कल वह कह रहा था कि मैं कुछ दिन के लिए घूमने जाना चाहता हूं,'' वुडी ने कहा.

''मेरा मन नहीं मानता. वह कहीं जाता तो हम सब को बता कर जाता. कल के मौसम की वजह से वह किसी मुसीबत में न पड़ गया हो,'' पीकू बोली.

बहुत देर तक वे सब पोपो की बातें करते रहे. एकमात्र वही था जो कल से लौट कर नहीं आया.

उन सब के चले जाने के बाद पेनी घोंसले से बाहर निकला. उस ने सोच लिया कि कल सुबह वह एक अच्छी सी कहानी सुना कर इस पेड़ के सभी पक्षियों को अपना दोस्त बना लेगी.

रात को वह देर से लौटी. किसी की नजर उस पर नहीं पड़ी. अगली सुबह रात खुलते ही वह कोटर से बाहर आई और आतेजाते सभी पक्षियों को नमस्कार करने लगी. सब उसे शक की नजरों से देख रहे थे. उस ने कहा. ''मैं पोपो की बहन पेनी हूं. मैं दूसरे शहर में रहती थी. आज ही मैं यहां आई हूं.''

''पोपो यहां नहीं है.''

''मुझे पता है कि वह कुछ दिन के लिए शहर घूमने गया है. संयोग की बात है कि कल जब वह घूम ने निकला तभी मौसम खराब हो गया. जब तक वह लौट कर नहीं आता मैं यहां तब तक उस के लौटने का इंतजार करुंगी,'' पेनी बोली.

वह काफी देर तक सब के साथ बड़े प्यार से बातें करती रही.

''तुम से मिल कर अच्छा लगा,'' सारे पक्षी एक साथ बोले.

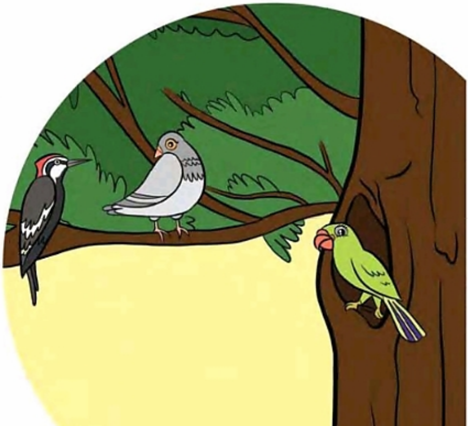

उस की मीठीमीठी बातों पर सब को विश्वास हो गया. उस ने भी सोच लिया अब वह अपनी जिंदगी ऐसे ही नहीं गुजारेगी और इसी पेड़ पर रहेगी. पोपो का पंख अभी पूरी तरह ठीक नहीं हुआ था. वह इतनी दूर उड़ कर नहीं आ सकता था. वह पंख ठीक होने का इंतजार कर रहा था.

किसी तरह हिम्मत कर वह एक महीने बाद नीम के पेड़ तक पहुंच गया. सब से पहले उस की मुलाकात पीहू से हुई. उस ने पूछा, ''कैसे हो पोपो? आप की बहन पेनी बता रही थी कि तुम घूमने गए हो.''

उस के कुछ पूछने से पहले ही पीकू बोला, ''तुम्हारी बहन बहुत नेक और मिलनसार है. सब के साथ बहुत प्यार से बातें करती है. उस ने हमें तुम्हारी कमी महसूस नहीं होने दी.''

पोपो को कुछ समझ में नहीं आ रहा था. अचानक उस के जाते ही उस की बहन कहां से आ गई? वह चुपचाप सब की बातें सुनता रहा. शाम को पेनी लौट आई. उसे देखते ही पोपो समझ गया कि यही वह पेनी है जिस ने पेड़ के अन्य पक्षियों को विश्वास में ले कर उस का घर हथिया लिया है. उस ने उस से सीधे उलझना ठीक नहीं समझा और उस के आते ही बोला, ''कैसी हो मेरी बहन?''

पोपो को देख कर पेनी जरा भी नहीं घबराई. उस ने सोच लिया था कि अब वह इस जगह को छोड़ कर नहीं जाएगी.

''मुझे आशा है कि तुम्हें यहां कोई परेशानी नहीं हुई होगी,'' पोपो बोला.

''मैं यहां बहुत आराम से रही और आगे भी रहूंगी.''

पोपो समझ गया कि पेनी अब आसानी से इस जगह को छोड़ने वाली नहीं है. पेनी ने उसे दबी जबान फिर धमकी देते हुए कहा, ''तुम्हारे लिए यही अच्छा रहेगा कि तुम इतने दिनों तक जहां थे वहीं रह लो. मैं अब इस जगह से जाने वाली नहीं हूं.''

''तुम्हें जाने के लिए कौन कह रहा है पेनी. तुम यहां आराम से रह सकती हो,'' पोपो प्यार से बोला. वह झगड़ा कर के अन्य पक्षियों को पेनी के पक्ष में नहीं करना चाहता था.

रात होते ही पोपो वहां से चला गया. पेनी ने राहत की सांस ली. पास ही एक पेड़ पर उस ने रात बिताई.

उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह पेनी को यहां से कैसे भगाए?

अगले दिन सुबह पेनी भोजन की तलाश में निकल पड़ी. पोपो आराम से खाना खा कर दोपहर में ठिकाने पर लौट आया. उस ने आते ही नीम के पेड़ पर रहने वाले सारे पक्षियों को इकट्ठा किया और बोला, ''मुझे आप सब को एक खुशखबरी सुनानी है.''

''कैसी खुशखबरी?'' सभी बोले.

''मुझे अभीअभी खबर मिली कि मेरी बहन पेनी का वन की खूफिया एजेंसी में चुनाव हो गया है. उसे कल ही खूफिया सलाहकार के पास पहुंचना है. अफसोस उस के बाद वह फिर कभी यहां नहीं आ सकेगी.''

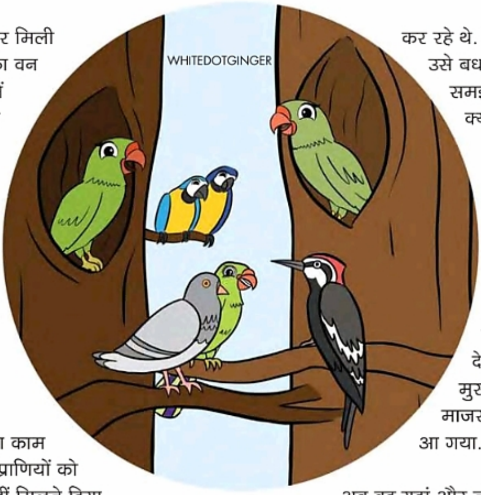

''क्यों भला?'' पीकू ने पूछा.

''यह जिम्मेदारी वाला काम है. इस काम में लगे प्राणियों को उन के साथियों से नहीं मिलने दिया जाता.''

''हमें उस के जाने का बहुत बुरा लगेगा,'' पीहू बोला.

''क्या करें मजबूरी है,'' पोपो बोला. पेड़ पर रहने वाले सारे पक्षी पेनी के लौटने का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे. उस के आते ही सब उसे बधाई देने लगे. पेनी को समझ नहीं आया कि यह क्या हो रहा है?

''तुम मुझे किस बात की बधाई दे रहे हो? ''उस ने पूछा तो पीहू कबूतर ने उसे सारी बात बता दी.

पेनी ने पोपो की ओर देखा. वह मंदमंद मुसकरा रहा था. सारा माजरा उस की समझ में आ गया.

अब वह यहां और नहीं रुक सकती थी. शाम तक बधाई देने वालों का तांता लगा रहा. यह देख कर पेनी का मुंह उतर गया. वह समझ गई कि उसे यहां से भगाने के लिए पोपो ने यह चाल चली है. अगले दिन सुबह पेनी सब से विदा ले कर चली गई और फिर कभी लौट कर नहीं आई. अपना ठिकाना फिर से पा कर पोपो बहुत खुश था. ●

उत्तर पृष्ठ :

पृष्ठ 9 : छिपे चित्र ढूंढ़ें :

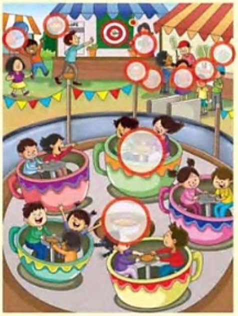

पृष्ठ 33 :पता करें :

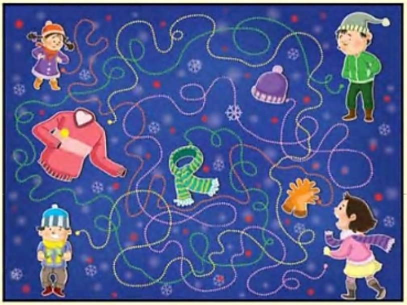

FOR THE FIRST TIME,
A COLLECTION OF 72
HANDPICKED STORIES

CHAMPAK IN ASSOCIATION WITH RUPA

HELP CHILDREN BE THEIR BEST SELVES, ONE STORY AT A TIME!

GET YOUR COPY NOW!

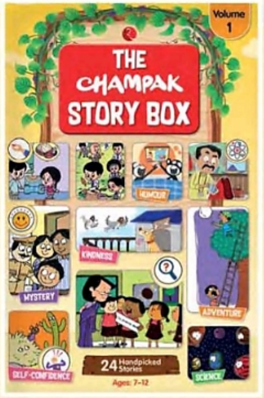

Volume 1
THE CHAMPAK STORY BOX
HUMOUR
KINDNESS
MYSTERY
ADVENTURE
SELF-CONFIDENCE
SCIENCE
24 Handpicked Stories
Ages: 7-12

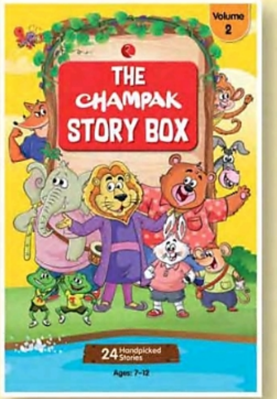

Volume 2
THE CHAMPAK STORY BOX
24 Handpicked Stories
Ages: 7-12

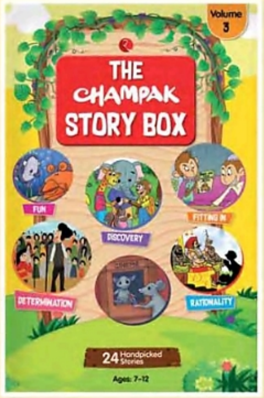

Volume 3
THE CHAMPAK STORY BOX
FUN
DISCOVERY
FITTING IN
DETERMINATION
RATIONALITY
24 Handpicked Stories
Ages: 7-12

AGES: 7-12

AVAILABLE ON DELHIPRESS.IN
& ALL LEADING BOOKSTORES ACROSS THE COUNTRY.

T&C apply

To subscribe: Call/SMS/WhatsApp: 8588843408 | Toll Free Number: 1800 103 880
email: subscription@delhipress.in
For online payment visit www.delhipress.in/subscribe and
use the promotional code CB5 to get 5% discount.

(REGISTERED) RNI 16420/68 DL(C)-14/1093/2021-23 WPP U(C)148/40/2021-23 P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 02 to 08 Published on 26/12/2021. Pgs. 52

THE
SOLID
COLA
PARLE
PARLE
Rol·a·Cola
·The Solid Cola·
SUGAR BOILED CONFECTIONERY